अरुणिमा

स्मारिका 2021-22

भातखण्डे ललितकला शिक्षा समिति द्वारा संचालित

गुरुकुल महिला महाविद्यालय

कालीबाड़ी रोड़, रायपुर (छ.ग.) फोन : 0771–4053443

Email : info@gurukulraipur.com

स्व. डॉ. अरूण कुमार सेन

संस्थापक अध्यक्ष

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, भारतीय संगीत के प्रति पूर्ण समर्पित, तपस्वी साधक एवं अंचल के उज्वल नक्षत्र स्व. डॉ. अरूण कुमार सेन अपनी अद्भुत बुद्धिमता, अथक परिश्रम, अविचल कर्तव्यनिष्ठा एवं स्वभावगत मधुरता के लिए एक अनुकरणीय आदर्श थे। उनके कृतित्व की स्मृति अद्यपर्यन्त चिरस्थायी है। वे एक महान संगीतज्ञ, ख्यातिलब्ध शिक्षाविद, समाजसेवी, नारी शिक्षा के प्रति सदैव समर्पित तथा नाट्य, नृत्य एवं अन्य ललितकलाओं के विकास के लिए सदैव तत्पर रहे। 'कर्म ही पूजा है' सह सूक्ति आजीवन उनकी युक्ति बनी रही।

प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मानसिक संतुलन न खोना, व्यवहार में सामान्यता बनाये रखना उनकी चारित्रिक विशेषता रही। भारतीय संस्कृति, साहित्य, कला को समृद्ध करने तथा सत्यम् शिवम सुन्दरम् के उदान्त भावों का विन्यास करने में छत्तीसगढ़ का अवदान ऐतिहासिक और विशिष्ठ ही नहीं वरन उनके लिए मूल्यवान रहा। संगीत और साहित्य में प्रतिभा संपन्न होने के साथ ही, विभिन्न लोकविधाओं में आपकी प्रतिभा मुखर हुई हैं। यही सृजन आपकी अप्रतिम विद्धता, चिंताशीलन और सौन्दर्यवेदित्व की सशक्त अभिव्यंजना बनी। सुगंध, चंदन का स्वाभाविक गुण है। यत्र-तत्र रखने पर भी वह न केवल स्वयं महकता है, वरन् संपूर्ण वातावरण में भी अपनी सुगंध बिखरा देता है। चंदन सा महकता व्यक्तित्व पाया था, डॉ अरूण कुमार सेन ने आज भी खुशबू अपने यशरूपी भाव से आपके होने का एहसास निरंतर कर रहा है।

संपादकीय

"जिंदगी की असली उड़ान अभी बाकी है,
जिंदगी के कई इम्तिहान अभी बाकी है।
अभी तो नापी है, मुट्ठी भर जमीं,
अभी तो सारा आसमान बाकी है।"

सफलता प्रत्येक मुनष्य के जीवन का लक्ष्य है। जीवन चुनौतियों और अवसरों से भरा है, कड़ी मेहनत और समर्पण सफलता की यात्रा का एकमात्र मंत्र है। सफलता प्राप्त करने के लिये प्रयत्न करना जरूरी है और प्रयत्न का सही दिशा में होना जरूरी है, यह जो सही दिशा है वह हमारी बुद्धि और विवेक तय करते हैं जिसके लिए उन्हें हमारे अंतःकरण में संचित ज्ञान की आवश्यकता पड़ती है। यह ज्ञान हमें शिक्षा के माध्यम से प्राप्त होता है। शिक्षा जीवन को निखारती, संवारती, तराशती है। शिक्षा का दामन थामकर ही हमें सफलता प्राप्त होती है और साथ ही हम जीवन जीने के सही अंदाज का अनुभव कर पाते हैं। व्यक्तित्व के विकास का एकमात्र माध्यम शिक्षा ही है। विद्यार्थी जीवन में प्राप्त की गई शिक्षा उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है और हमारा यही प्रयत्न रहता है कि हम प्रत्येक विद्यार्थी को सही दिशा प्रदान करें। युवावस्था में मन चंचल होता है, इस चंचल मन में अनेक तरह के विचार उमड़ते हैं, इन विचारों को सहेजने और सार्थक दिशा प्रदान करने के लिए हमने इस पत्रिका को एक साझा मंच बनाया है। इसमें छात्राओं की सभी प्रकार की रचनाएँ है, इन रचनाओं में उनकी कोमल कल्पनाएं है, उनकी भावनाएं है, कुछ बातें हैं, कुछ इरादे हैं, आवश्यकता है उनकी क्रियात्मकता को ग्रहण करने और दिशा प्रदान करने की। निश्चित रूप से ये बच्चे आसमां की बुलंदियों पर अपना नाम लिखेंगे और देश का नाम रौशन करेंगे।

मैं आभारी हूँ, महाविद्यालय के प्राचार्य, समस्त प्राध्यापक एवं महाविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों की जिनके सहयोग एवं मार्गदर्शन से संपादक का यह दायित्व निभाना आसान रहा। प्रस्तुत है, अरूणिता पत्रिका आपके सम्मुख प्रतीक्षा होगी आपके सुझाव की जिससे हम पत्रिका को और अधिक सँवार सकें।

डॉ. सीमा चंद्राकर, सहा.प्राध्यापक हिन्दी, गुरुकुल महाविद्यालय

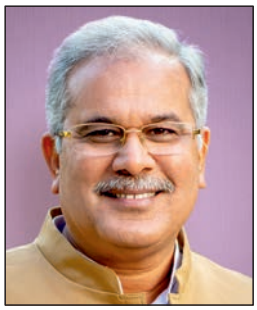

भूपेश बघेल
मुख्यमंत्री
Bhupesh Baghel
Chief Minister

मंत्रालय, महानदी भवन
अटल नगर, रायपुर, 492002, छत्तीसगढ़
फोनः +91(771) 2221000, 2221001
ई-मेल: cmcg!nic.in
Mantralaya, Mahandi Bhawan,
Atal Nagar, Raipur, 492002, Chhattisgarh
Ph. : +91(771) 2221000, 2221001
E-mail:cmcg@nic.in
Do. No. ..285... Date : 27/10/2021

संदेश

मुझे यह जानकार हार्दिक प्रसन्नता हुई कि भातखण्डे ललित कला शिक्षा समिति द्वारा संचालित गुरुकुल महिला विद्यालय, रायपुर द्वारा वार्षिक पत्रिका ''अरूणिता'' का प्रकाशन किया जा रहा है।

छात्राओं में अभिव्यक्ति का कौशल विकसित करने के लिए ऐसी पत्रिकाएं महत्वपूर्ण होती है, छात्रों के साहित्यिक तथा बौद्धिक स्तर को मजबूत बनाने के लिए इस तरह के प्रकाशन की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। साथ ही महाविद्यालय की गतिविधियों एवं विशेषातओं की जानकारी भी लोगों तक पहुंचती है।

प्रकाशन अपने उद्देश्यों में सफल हो, इसके लिए हार्दिक मंगलकामनाएं।

भूपेश बघेल

उमेश पटेल
मंत्री, छत्तीसगढ़ शासन
उच्च शिक्षा, कौशल विकास,
तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार,
विज्ञान और प्रौद्योगिकी, खेल एवं युवा कल्याण

मंत्रालय कक्ष क्रमांक- M1-12
महानदी भवन, नवा रायपुर, अटल नगर रायपुर(छ.ग.)
फोन: 0771-2510316, 2221316
नि.: D-1/2, शास. आवासीय परिसर, देवेन्द्र नगर, रायपुर
फोन: 0771-2881030
ग्राम व पोस्ट नंदेली, जिला-रायगढ़, कार्यालयः 7000477747
क्रमांक... बी21/952 दिनांक 03/09/2021

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि गुरुकुल महिला महाविद्यालय, रायपुर द्वारा वार्षिक महाविद्यालय, रायपुर द्वारा वार्षिक पत्रिका सत्र 2021-22 ''अरूणिता'' का प्रकाशन किया जा रहा है जिसमें छात्राओं, प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखों, शैक्षणिक गतिविधियों तथा विभागीय प्रतिवेदनों का प्रकाशन किया जायेगा।

आशा है महाविद्यालय पत्रिका 'अरूणिता' महाविद्यालय की गतिविधियां एवं छात्राओं के साहित्यिक, सांस्कृतिक, सृजनात्मकता को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

महाविद्यालय में अध्ययनरत् सभी छात्राओं को उनके भविष्य के लिए शुभकामनाएँ एवं महाविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाईयां।

उमेश पटेल

डॉ. केशरी लाल वर्मा
कुलपति
Dr. Keshari Lal Verma
Vice Chancellor

पं. रविशंकर विश्विद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) भारत
Pt. Ravishankar Shukla University
Raipur (Chhattisgarh) - 492010- INDIA
Office : +91 0771-2262857
Fax : +91 771-2263439
E-mail : vc_raipur@prsu.org.in
Website :www.prsu.ac.in
Mobile : 0852734400

संदेश

यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई कि गुरुकुल महिला महाविद्यालय, कालीबाड़ी रोड, रायपुर महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका ''अरूणिता'' सत्र 2021-22 का प्रकाशन किया जा रहा है।

किसी भी शैक्षणिक संस्था का उद्देश्य अपने विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम के साथ-साथ पाठ्येत्तर गतिविधियों, यथा- साहित्यक, सांस्कृतिक, खेलकूद, व्यक्तित्व विकास, आदि में भी सक्षम बनाना है। महाविद्यालयीन पत्रिका के माध्यम से युवाओं के सृजनात्मक प्रतिभा को पथ प्रदर्शित किया जाएगा, ऐसा विश्वास है।

आशा है महाविद्यालयीन पत्रिका ''अरूणिता'' महाविद्यालय की वार्षिक गतिविधियों एवं छात्र-छात्राओं के प्रतिभा को विकसित एवं प्रकाशित करने में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

शुभकामनाओं सहित।

डॉ. केशरी लाल वर्मा
कुलपति

पं. रविशंकर विश्विद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) भारत
Pt. Ravishankar Shukla University
Raipur (Chhattisgarh) - 492010- INDIA
Office : +91 0771-2262540
E-mail : registraprsu@gmail.com
Website :www.prsu.ac.in

क्रमांक/1553/कु.स./2021

रायपुर, दिनांक 26/06/2021

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि भातखण्डे ललित कला शिक्षा समिति द्वारा संचालित गुरुकुल महिला महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका ''अरूणिता'' का प्रकाशन किया जा रहा है।

भातखण्डे ललित कला शिक्षा समिति का न केवल प्रदेश में वरन पूरे भारतवर्ष में देश की ललित कला संस्कृति, संगीत विधाओं को अक्षुण्ण बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण योगदान है।

संपूर्ण विश्व में आज भी भारतीय संगीत एवं ललित कलाओं को सम्मान प्राप्त है। इसमें आप जैसे संस्थाओं की महती भूमिका है।

आशा है कि महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'अरूणिता' के माध्यम से महाविद्यालय में अध्ययनरत् छात्राओं को अपनी मौलिक रचनाओं के प्रस्तुतीकरण का एक उचित अवसर प्राप्त होगा।

शुभकामनाओं सहित

26.8.21

प्रो. गिरीश कांत पाण्डेय
कुलसचिव

संदेश

ऐरिसटॉटल का कथन "Educating the mind without educating the heart is no education at all" भातखण्डे ललित कला शिक्षा समिति की स्थापना छात्राओं को किताबी ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक शिक्षा भी प्रदान करने के उद्देश्य से किया गया। इसकी पूर्ति के लिए अध्यापन के साथ सांस्कृतिक, साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन गुरूकुल महिला महाविद्यालय में किया जाता है। इसके लिए महाविद्यालय परिवार बधाई का पात्र है।

अनंत शुभकामनाओं सहित।

तरल मोदी
अध्यक्ष
भातखण्डे ललितकला शिक्षा समिति

स्थापित- 1950

फोन/फैक्स: 0771-40306032

भातखण्डे ललितकला शिक्षा समिति

पंजीयन क्रमांक 16/1951-52

गुरूकुल परिसर, कालीबाड़ी रोड, रायपुर (छ.ग.) भारत, Email :bissr1950@yahoo.com

संचालित संस्थाएं/प्रतिष्ठान

कमलादेवी संगीत महाविद्यालय रायपुर
गुरूकुल महिला विद्यालय, रायपुर
गुरूकुल परिसर, कालीबाड़ी रायपुर
डॉ. अरूण कुमार सेन स्मृति संगीत शोध संस्थान, रायपुर

लक्ष्मीनारायण कन्या उ.मा. शाला, रायपुर
भातखण्डे संगीत संस्थान, मुम्बई व रायपुर
अरूणोदय कन्या प्राथमिक शाला, रायपुर

रंगमंदिर प्रेक्षागृह, गाँधी चौक, रायपुर
संगीतिक ''म्यूजिकल सर्कल'' रायपुर
गुरूकुल प्रेक्षागृह, कालीबाड़ी, रोड, रायपुर
अरूण मंच, गुरूकुल परिसर, रायपुर

संदेश

शिक्षा का अर्थ अध्यापन में दिये जाने वाले ज्ञान तक ही सीमित नहीं है अपितु शिक्षा का वास्तविक अर्थ छात्राओं में व्यावहारिकता का विकास कर एक वृहद स्तर पर अपने आस-पास के वातावरण को समझने का प्रयास करना है। शिक्षा एक सतत् बदलाव की प्रक्रिया है जो विचारों, भावनाओं और कार्यों को उच्च से उच्चतर बनाती है।

गुरुकुल महिला महाविद्यालय का मुख्य उद्देश्य छात्राओं का सर्वांगीण विकास के यथा संभव प्रयास करना है। इसी प्रयास की एक कड़ी महाविद्यालयीन पत्रिका 'अरूणिता'' का प्रकाशन है।

महाविद्यालय परिवार को अनेकों बधाई और शुभकामनाओं सहित।

श्री अजय तिवारी
अध्यक्ष, शासी निकाय
गुरुकुल महिला महाविद्यालय, रायपुर छ.ग.

संदेश

सफलता कठिन परिश्रम से प्राप्त होता है और रहता उसके साथ है जो अतीत की उपलब्धियों पर आश्रित न रहते हुये अपना कार्य करते हैं अर्थात् किसी एक उपलब्धि की प्राप्ति से जीवन पर्यन्त सफलता नहीं मिलती है। जीवन पर्यन्त सफल होने के लिए सतत प्रयासशील एवं कर्मशील होना आवश्यक है। शिक्षा केवल मस्तिष्क में किसी विषय के तथ्यों को भरना नहीं है, अपितु अंतरात्मा को जागरूक करना है।

गुरुकुल महिला महाविद्यालय में छात्राओं को इस गुढ़ तथ्य को समझाने का प्रयास विभिन्न शैक्षणिक तथा सह शैक्षणिक गतिविधियों द्वारा किया जाता है।

'अरूणिता' के प्रकाशन के लिए बधाई एवं शुभकामनाओं सहित।

श्री नरेशचन्द्र गुप्ता

संदेश

वर्तमान समय में मानव जीवन चुनौतियों और प्रतियोगिताओं पर आधारित है। इस माहौल में शिक्षा ही वह माध्यम है जिससे मनुष्य अपने व्यक्तित्व का चहुंमुखी विकास कर अपने जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति कर सकता है। इसी परिप्रेक्ष्य में गुरुकुल महिला महाविद्यालय में छात्राओं को शैक्षणिक तथा सहशैक्षणिक गतिविधियों द्वारा दक्ष बनाने का प्रयास किया जाता है।

वैश्विक महामारी काल में छात्राओं को मानसिक संबल प्रदान करने एवं सोच को नई दिशा देने के दृष्टिकोण से ''अरूणिता'' का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है।

पूरे महाविद्यालय को बधाई एवं शुभकामनाओं सहित।

श्रीमती शोभा खण्डेलवाल
सचिव

प्राचार्य की कलम से

एक लक्ष्य हमें है पाना, जिस पथ को हमने हैं थामा।
अब है उस पर ही चलना, अब नहीं रूकेंगे हम।
उस लक्ष्य की ओर है चलना, उस तक है हमें पहुंचना।
जाने किससे हो भिड़ना, पर डटे रहेंगे हम।
अब यही हमारा व्रत है, अब हमें नहीं झुकना है।
रख गर्व से मस्तक ऊँचा, अब नहीं झुकेंगे हम।
जिससे दूरी इतनी है, मंजिल उतनी प्यारी है।
पथ नहीं दिखता तो भी, पहुंचेंगे उस तक हम।

'अरूणिता' के प्रकाशन से जुड़े समस्त जनों को शुभकामनाओं सहित।

डॉ. संध्या गुप्ता
प्राचार्य

VISION

We the Management, Administration, Teaching and Non-Teaching Staff are working together with a vision of providing educational excellence and inculcating ethical and moral values to students so that they should flourish intellectually strong, socially responsible to contribute vital part in building of developed society and nation.

विजन

गुरुकुल महिला महाविद्यालय में प्रबंधन, प्रशासन, शैक्षणिक तथा अशैक्षणिक कर्मचारी शैक्षणिक उत्कृष्टता प्रदान करने और छात्राओं में नैतिक मूल्यों को विकसित करने की दृष्टि से एक साथ काम कर रहे हैं ताकि वे विकसित समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए बौद्धिक रूप से मजबूत, सामाजिक रूप से जिम्मेदार हो सकें।

MISSION

1. Transforming students through development of various skills with curriculum.
2. Making them sensible towards society.
3. Promoting them for higher studies, research, entrepreneurship and projects.
4. Various activities to nurture them to face the future responsibilities.
5. To inculcate strong values combining with academics and extra-curricular activities.

मिशन

1. अध्यापन के साथ विभिन्न कौशलों के विकास के माध्यम से छात्राओं को बदलना।
2. उन्हें समाज के प्रति समझदार बनाना।
3. उच्चतर शिक्षा, अनुसंधान, उद्यमिता और परियोजनाओं के लिए उन्हें बढ़ावा देना।
4. अनेक सहशैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन छात्राओं को भविष्य की जिम्मेदारियों का सामना करने के लिए उन्हें पोषित करने के लिए।
5. शैक्षणिक और पाठ्येतर गतिविधियों के साथ संयोजन द्वारा छात्राओं में मूल्यों को विकसित करना।

वाणिज्य विभाग

भातखंडे ललित कला शिक्षा समिति द्वारा संचालित गुरुकुल महिला महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 2001 में वाणिज्य संकाय के अंतर्गत बीकॉम 40 सीट के साथ प्रारंभ हुआ तथा वर्ष 2005 में एम.कॉम की कक्षाएँ 30 सीट के साथ प्रारंभ किया गया। वर्तमान में बी.कॉम (सभी अनिवार्य विषय) 100 सीट तथा बी.कॉम (अतिरिक्त विषय कम्प्यूटर) 100 सीट एवं एम.कॉम (सेमेस्टर पध्दति) 30 सीट आबंटित है। वाणिज्य संकाय में 08 सहायक प्राध्यापक कार्यरत हैं। प्रत्येक वर्ष विभाग द्वारा छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु संगोष्ठी, व्यक्तित्व विकास संबंधी कार्यक्रम, रिमेडियल कक्षाएं, कार्यशाला, आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा, खेल संबंधी गतिविधियां तथा विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे वाद-विवाद, रंगोली ,मेहंदी का आयोजन समय-समय पर किया जाता है| एमकॉम की छात्राओं को शोध कार्य हेतु मार्गदर्शन दिया जाता है।

इस कोरोना महामारी के दौरान महाविद्यालय में वाणिज्य विभाग द्वारा वर्ष 2020-21 में 03 राष्ट्रीय स्तर के वेबीनार का आयोजन किया गया। कोविड प्रोटोकाल के अनुसार सत्र 2020-21 में अध्यापन कार्य ऑनलाईन पद्धति से किया गया गया।

वर्ष 2020-21 में स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा।

वाणिज्य विभाग

1. डॉ. राजेश अग्रवाल (विभागाध्यक्ष)
2. डॉ. पदमा सोमनाथे
3. श्रीमती कविता सिलवाल
4. श्रीमती रात्रि लहरी
5. श्रीमती ज्योति वर्मा
6. मान्या शर्मा

विज्ञान विभाग

गुरुकुल महिला महाविद्यालय में विज्ञान विभाग का आरंभ महाविद्यालय की स्थापना के साथ ही सन 2001 से हुआ। विज्ञान समूह के अंतर्गत स्नातक स्तर पर बी.एस.सी. (गणित, कम्प्युटर विज्ञान एवं जीव विज्ञान समूह) संचालित है। प्रत्येक समूह 50-50 सीटें आबंटित है। वर्तमान में विज्ञान विभाग में 13 प्राध्यापक विभिन्न विषयों में कार्यरत है। प्रायोगिक पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए सर्वसुविधायुक्त, सुसज्जित विषयवार प्रयोगशाला महाविद्यालय में उपलब्ध है। उच्च शिक्षा की गुणवत्ता को बनाये रखने के लिए महाविद्यालय में विज्ञान परिषद का गठन किया जाता है, जिसके अंतर्गत छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु प्रतिवर्ष संगोष्ठी, व्यक्तित्व विकास संबंधी कार्यक्रम, क्विज, भाषण आदि प्रतियोगितायें तथा आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा आयोजित की जाती है। छात्राओं के प्रायोगिक ज्ञान के लिए समय-समय पर बायोलॉजिकल संस्थान व इंडस्ट्रीयल विजिट कराया जाता है।

कोविड- 19 के दौरान महाविद्यालय में विज्ञान विभाग के द्वारा वर्ष 2020-21 में समय-समय पर वेबीनार, क्विज, निबंध प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया।

बी.एस.सी. (गणित, कंप्यूटर विज्ञान एवं जीव विज्ञान समूह) का परीक्षा परिणाम शत् प्रतिशत रहा।

विज्ञान विभाग

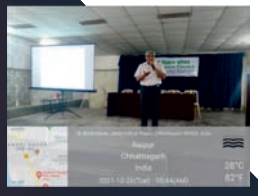

1.डॉ. वंदना अग्रवाल(विभागाध्यक्ष, विज्ञान विभाग)
2.डॉ. मेघा अग्रवाल (वनस्पति विभाग)
3.डॉ. सीमा साहू (वनस्पति विभाग)
4.डॉ. रैनी अग्रवाल (रसायन विभाग)
5.डॉ. सीमा चंद्राकर (हिन्दी विभाग)
6.डॉ. सिमरन वर्मा (अंग्रेजी विभाग)
7.सुश्री देवश्री वर्मा(जंतु विभाग)
8.श्रीमती सोनल पाण्डा(जंतु विभाग)
9.डॉ. अनुराधा गुप्ता(भौतिक विभाग)
10.सुश्री राजनंदनी साहू(भौतिक विभाग)
11.श्रीमती टीनू दुबे (गणित विभाग)
12.सुश्री अंजली देवांगन (गणित विभाग)
13.सुश्री संध्या जायसवाल (गणित विभाग)
14. कमलेश निर्मलकर (लैब टैक्नीशियन)

कम्प्यूटर विज्ञान विभाग

गुरुकुल महिला महाविद्यालय की स्थापना के साथ ही वर्ष 2001 में कम्प्यूटर विभाग की स्थापना हुई। वर्तमान में कम्प्यूटर विभाग में स्नातक स्तर पर बी.सी.ए. - 30 सीट, बी.एस.सी. (कम्प्यूटर सांइस) - 50 सीट, बी.काम. (कम्प्यूटर एप्लीकेशन) - 100 सीट आबंटित है।

एकवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम पी.जी.डी.सी.ए. /डी.सी.ए. - 60/60 सीट आबंटित है।

वर्तमान में कम्प्यूटर विभाग में 05 सहायक प्राध्यापक और 02 लैब टेक्निशियन कार्यरत है। फ्री वाई-फाई सुविधा छात्राओं को प्रदान की गई है। छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु प्रतिवर्ष संगोष्ठी, व्यक्तित्व विकास संबंधित कार्यक्रम, आंतरिक मूल्यांकन, ट्रेनिंग कार्यक्रम, वर्कशॉप आदि आयोजित किये जाते है और कैरियर बनाने हेतु उन्हें समय-समय पर उचित प्रशिक्षण और मार्गदर्शन दिया जाता है। इस वर्ष कोविड-19 के दौरान महाविद्यालय में कम्प्यूटर विभाग द्वारा वर्ष 2020-21 में Online Yoga Training Program, Online Quiz Competition और Online Career Oriented Webinar का आयोजन किया गया।

वर्ष 2020-21 में वार्षिक परीक्षा परिणाम बी.सी.ए प्रथम वर्ष, द्वितीय वर्ष एवं तृतीय वर्ष शत प्रतिशत रहा साथ ही पी.जी.डी.सी.ए और डी.सी.ए. में भी शत-प्रतिशत परिणाम रहा ।

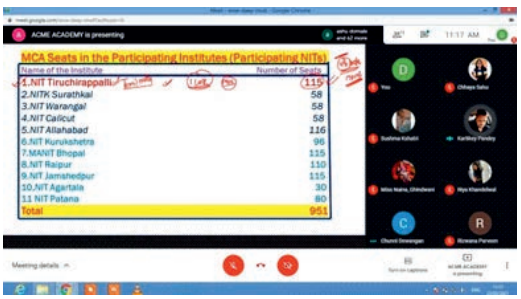

कम्प्यूटर विभाग

1. डॉ.अमिता तेलंग (विभागाध्यक्ष)
2. डॉ.दीपशिखा शर्मा (सहा. प्राध्यापक)
3. श्रीमती रुकमणी दिग्रसकर (सहा. प्राध्यापक)
4. कु. अंशिका दुबे (सहा. प्राध्यापक)
5. कु. पुनम कटंकर (सहा. प्राध्यापक)
6. श्री वैभव सिंह ठाकुर (लैब टेक्नीशियन)
7. श्री मनोज कुमार साहू (लैब टेक्नीशियन)

गुरुकुल महिला महाविद्यालय खेल विभाग

गुरुकुल महिला महाविद्यालय आज 20 बसंत को पार कर चुका है इतने लम्बे समय का अपना एक अलग ही इतिहास होता है, जबसे इस महाविद्यालय की स्थापना हुई है तब से इसने गौरवपूर्ण ऊंचाईयों को छुआ है, छत्तीसगढ़ के हृदय स्थल राजधानी में महाविद्यालय की अपनी एक अलग ही पहचान स्थापित हो चुकी है। आज न केवल अध्ययन के क्षेत्र में अपितु क्रीड़ा के क्षेत्र में भी एक अलग पहचान है। छात्राओं के सर्वांगीण विकास में खेल के महत्व से इंकार नही कर सकते।

इसलिये महाविद्यालय में नियमित रूप से अलग अलग खेल गतिविधियों का आयोजन होता रहा है, आज हमारे कॉलेज द्वारा खेल गतिविधियों को पूरी संजीदगी से अध्ययन- अध्यापन के साथ ही प्रतिदिन अलग- अलग कक्षा के लिए अभ्यास का आयोजन किया जाता है। महाविद्यालय के द्वारा विभिन्न खेलों खो-खो, शतरंज, वॉलीवाल, बैडमिंटन, टेनिस आदि की प्रारम्भिक जानकारी के साथ इनके लिए अभ्यास का अवसर भी प्रदान किया जाता है।

इसी का परिणाम है कि हमारे महाविद्यालय की छात्राओं का प्रदर्शन खेलों में न केवल राज्य स्तर पर श्रेष्ठतम रहता है, अपितु विश्वविद्यालय की खेल विधाओं में भी अपना स्थान बनाने में सफल रहती है।

महाविद्यालय हमेशा से ऐसे छात्राओं को लगातार प्रोत्साहित भी करता है उनकी शैक्षणिक शुल्क में रियायत देना, अध्यापन में मदद करना, समय -समय पर उनको दिशा निर्देश व मार्गदर्शन देना।

महाविद्यालय के क्रीड़ा विभाग द्वारा समयानुसार योग और मानसिक, शारीरिक दक्षता के विकास के लिए व्याख्यान माला का आयोजन भी प्रतिवर्ष किया जाता है। साथ ही हर वर्ष अन्तरमहाविद्यालीन खेल के साथ ही राज्यस्तरीय खेलों का आयोजन भी किया जाता रहा है, जिनमे खो-खो, हैंडवाल, शतरंज आदि खेलो में महाविद्यालय ने हमेशा से गौरवशाली ढंग से आयोजन कर अपनी एक अलग पहचान बनाई।

महाविद्यालय द्वारा हर छात्राओ के सहभागिता सुनिश्चितता को बढ़ाने उनकी प्रतिभा को निखारने वार्षिक क्रीड़ा का आयोजन भी खेल विभाग के सहयोग से किया जाता है। एक अनुशासित जीवन की सीख क्रीड़ा विभाग के सहयोग से खेलों द्वारा महाविद्यालयीन छात्राओ में विकास किया जाता है। आज महाविद्यालय शहर में अपनी एक अलग छवि बना चुका है। यही कारण है कि आज महाविद्यालय एक अग्रणी महिला महाविद्यालय के रूप में स्थापित हो चुका है।

"।। उद्यमेन ही सिध्यन्ति, कार्याणि न मनोरथैः।। के साफल्य को चरितार्थ करते हुए हमारा महाविद्यालय शिक्षा जगत में दैदीप्यमान है।"

डॉ. रिंकू तिवारी, क्रीड़ा अधिकारी

पुस्तकालय विज्ञान के पांच सूत्रों के साथ डॉ. अरुण कुमार सेन स्मृति ग्रंथागार

पुस्तकालय मानव की चेतना स्थल में उभरे विचारों और ज्ञान संबंधी विषम प्रसंगों की सुक्ष्म व्याख्या कर उन्हे ज्ञानार्जन करने की दिशा निर्देश देते है। साथ ही मनुष्य की कौतुहलता को एकीकृत कर सूचना देकर उपयोगकर्ताओं को आश्वस्त करते है। एक उत्तम पुस्तकालय की मजबूत फर्श पूर्ण प्रकाश का आवागमन समुचित रुप से शांत वातावरण ही छात्रों को पुस्तकालयों की तरफ आकर्षित करती है। वर्तमान समय मे पुस्तकालय का स्वरुप तकनीकबध्द हो गया है जिसमें शैक्षणिक संस्थान के उपयोगकर्ता अपनी उपयोग अनुसार ज्ञान जिज्ञासा को शांत कर सकते है। पुस्तकें चरित्र निर्माण का सबसे बढ़िया साधन है सर्वश्रेष्ठ विचारों से युक्त पुस्तकों के प्रचार से दुनिया को एक नयी दिशा दी जा सकती है। पुस्तकालय में अध्ययन हेतु पुस्तकों का संग्रह कर विविध प्रकार के ज्ञान, सूचनाओं, स्रोतों एवं सेवाओं को उपयोगकर्ताओं हेतू उपलब्ध कराया जाता है। विभिन्न विषयों के अनुसंधान करनेवाले शोधार्थियों को यदि पुस्तकालयों का सहारा न मिले तो वे अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सकते। शियाली रामामृत रंगनाथन के द्वारा प्रतिपादित किये पुस्तकालय विज्ञान के पांच सूत्रों का पालन करना चाहिए।

1. पुस्तक उपयोग के लिए हैं।
2. प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक मिले।
3. प्रत्येक पुस्तक को उसका पाठक मिले।
4. पाठक का समय बचाएं।
5. पुस्तकालय वर्धनशील संस्था है।

बौद्धिक जीवन का केंद्र बनने, शिक्षा में उत्कृष्टता का विशिष्ट वातावरण प्रदान करने, सूचना संसाधनों तक उद्देश्यपूर्ण पहुंच प्रदान करने के दृष्टिकोण से गुरुकुल महिला महाविद्यालय द्वारा स्थापित डॉ. अरुण कुमार सेन स्मृति ग्रंथागार वर्ष 2001 में शिक्षण की गुणवत्ता बढ़ाने व नवपरिवर्तनशील सूचना एवं सेवाओ को प्रदान करने के उद्देश्य से स्थापित हुआ। अनुभवी शिक्षकों के द्वारा चयनित पुस्तकालय में उपलब्ध विभिन्न प्रकाशनों की पाठ्य पुस्तके, सन्दर्भ ग्रन्थ, कहानी संग्रह शब्द कोश तथा ज्ञान कोश द्वारा शिक्षकों के रचनात्मक एवं सृजनात्मक कार्यों को प्रेरित करने एवं छात्राओं का बौद्धिक विकास करने का प्रयास किया जा रहा हैं। छात्राओं के लिए ग्रंथालय में मंगाई

जाने वाली शोध पत्रिकाएँ, समाचार पत्र तथा सामयिक पत्रिकाऐं नवीनतम ज्ञान की प्राप्ति में सहायक हैं। छात्राओं की परीक्षा की तैयारी के लिए गत वर्षो के प्रश्न पत्र, शिक्षकों द्वारा बनाये प्रश्न बैंक एवं प्रतियोगी परीक्षा से सम्बंधित पाठ्य सामग्री उपलब्ध हैं। ई-संसाधनों के वृहद उपयोगो को देखते हुए ग्रंथालय द्वारा इनफ्लिबनेट के एनालिस्ट कार्यक्रम को प्रति वर्ष पंजीकृत कराया जाता है जिससे 6000 ई-शोध पत्रिकायें तथा 31 लाख से अधिक ई-पुस्तकों की सुविधा से उपयोगकर्ता पहचान बनाकर लाभान्वित हो सकते है। ग्रंथालय के कंप्यूटर नेटवर्क द्वारा उपयोगकर्ता विभिन्न प्रकार के सूचना स्रोतों से समय-समय पर सूक्ष्म जानकारी प्राप्त कर अपनी समस्या का समाधान कर लेते है। प्रतिवर्ष ग्रंथपाल दिवस पर संगोष्ठी, निबंध प्रतियोगिता तथा उपयोगकर्ता शिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जाता हैं जिससे छात्राओं को अधिकतम जानकारी प्राप्त हो सके। बेहतर कार्य प्रणाली के अंतर्गत सामान्य ज्ञान की प्रतियोगिता आयोजित कर चयनित विद्यार्थियों को वर्षभर के लिए पुस्तके इशू कर पठन कार्य को प्रोत्साहित किया जाता है तथा बुक बैंक सुविधा प्रधान की जा रही हैं। ग्रंथालय के दैनिक क्रियाकलापों की सुविधा के लिए इन्फ्लिबनेट द्वारा संचालित SOUL 3.0 सॉफ्टवेयर क्रय किया गया हैं जिसके अंतर्गत WEBOPAC सुविधा द्वारा विद्यार्थियों को ग्रंथालय में उपलब्ध पाठय सामग्री पहुँच प्रदान की जा रही है, इसके माध्यम से उपयोगकर्ता अपने आवश्यक पाठ्य सामग्री के लिए ग्रंथालय में अनुरोध भेज सकते हैं। ग्रंथालय की विभिन्न कार्यो को संचालित करने, अमूल्य धरोहर को सुरक्षित रखने पाठको की उपयोगिता के अनुसार पठन सामग्री के व्यवस्थापन के लिए नियमावली तैयार कर अनुशासन व्यवस्था रखी जाती है।

अदिति जोशी
ग्रंथपाल
गुरुकुल महिला महाविद्यालय, रायपुर

राष्ट्रीय सेवा योजना गतिविधियाँ

dainikvishwapariwar.com/?p=38271

Chhattisgarh | National/International | Business | Sports | Entertainment | Health | Epaper-Raipur Edition

HEALTH

गुरुकुल महिला महाविद्यालय में आयुष्मान कार्ड निशुल्क बनवाने की व्यवस्था

September 22, 2021 subhash shrivastava Comment(0)

रायपुर (विश्व परिवार)। गुरुकुल महिला महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना यूनिट द्वारा महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं, शिक्षक, अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए दिनांक- 22/09/2021 दिन बुधवार को मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा आयुष्मान भारत स्वास्थ्य योजना के तहत आयुष्मान कार्ड निशुल्क बनवाने की व्यवस्था मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी के सहयोग से की गयी। आयुष्मान भारत योजना चिकित्सा हेतु एक महत्वपूर्ण योजना है आयुष्मान भारत योजना के तहत कार्ड धारक अस्पताल में आसानी से अपनी बीमारी का इलाज करा सकते हैं जिसमे 100 से अधिक लोगो का आयुष्मान कार्ड बनाया गया।कार्ड सी.एम.एच.ओ से आये भोजेन्दर साहू,शुभम चंद्राकर,गोलू निषाद,लकी निषाद द्वारा बनाया गया,कार्यक्रम में मुख्य भूमिका में प्राचार्य,कार्यक्रम अधिकारी रात्रि लहरी, वैभव सिंग ठाकुर एवं स्वंय सेवक रहे।

स्वागत समारोह 2021-22

महिला जागरूकता कार्यक्रम 2021-22

अंतर्कक्षीय मेहंदी प्रतियोगिता 2021-22

अंतर्कक्षीय रंगोली प्रतियोगिता 2021-22

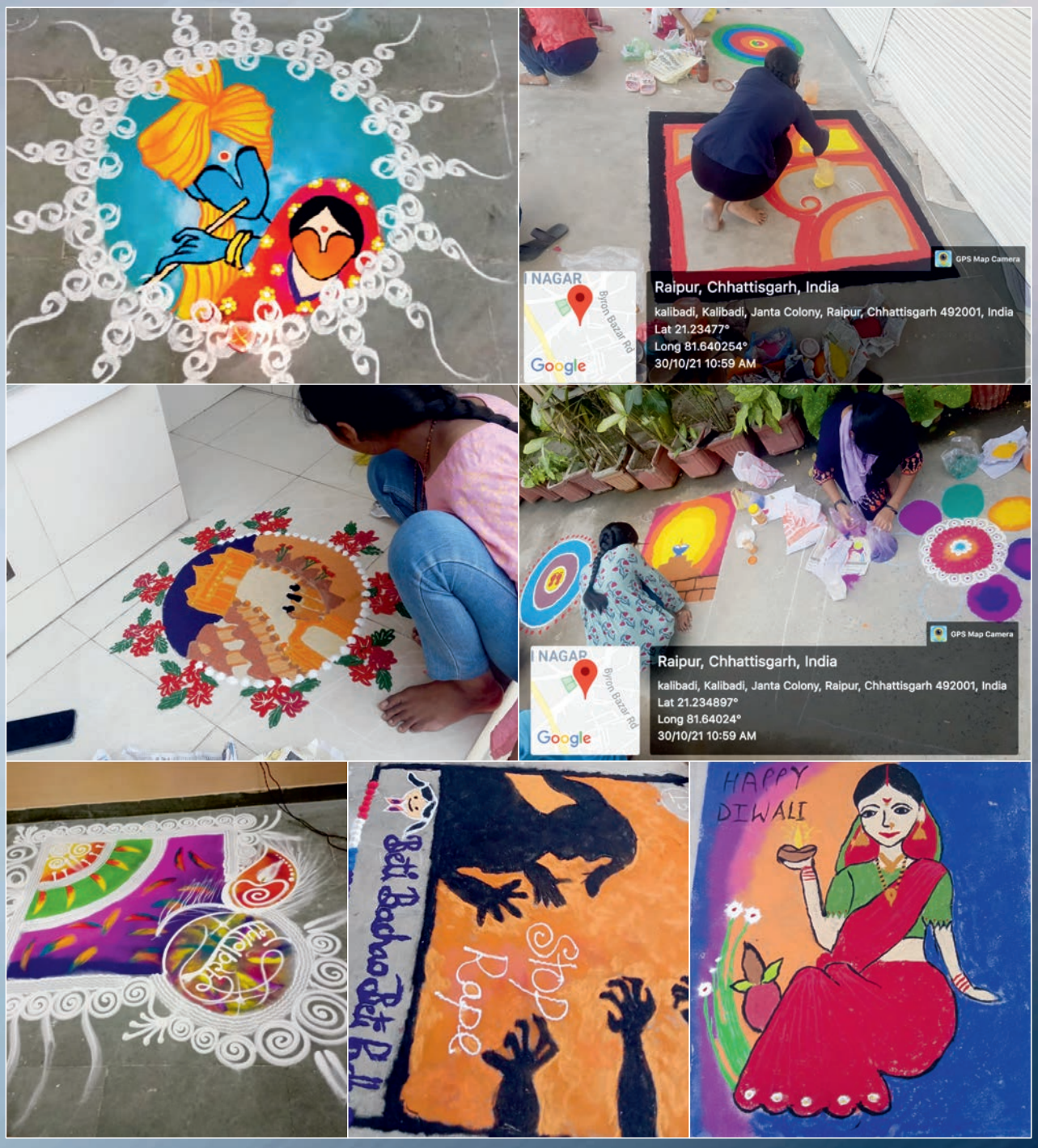

वेबीनार 2021-22

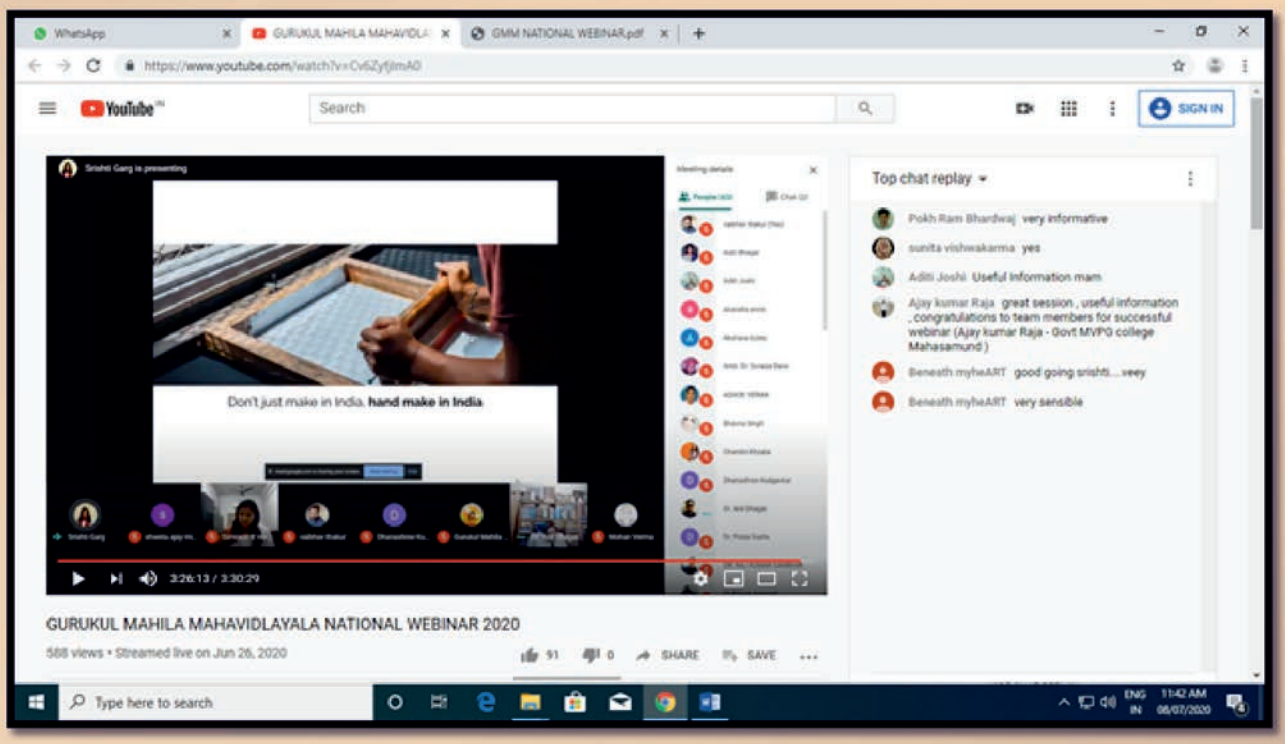
YouTube
Search
SIGN IN
Top chat replay
Pokh Ram Bhardwaj very informative
sunita vishwakarma yes
Aditi Joshi Useful information mam
Ajay kumar Raja great session , useful information , congratulations to team members for successful webinar (Ajay kumar Raja - Govt MVPG college Mahasamund)
Beneath myheART good going srishti....veey
Beneath myheART very sensible
Don't just make in India, hand make in India
GURUKUL MAHILA MAHAVIDLAYALA NATIONAL WEBINAR 2020
588 views • Streamed live on Jun 26, 2020
SHARE
SAVE
Type here to search

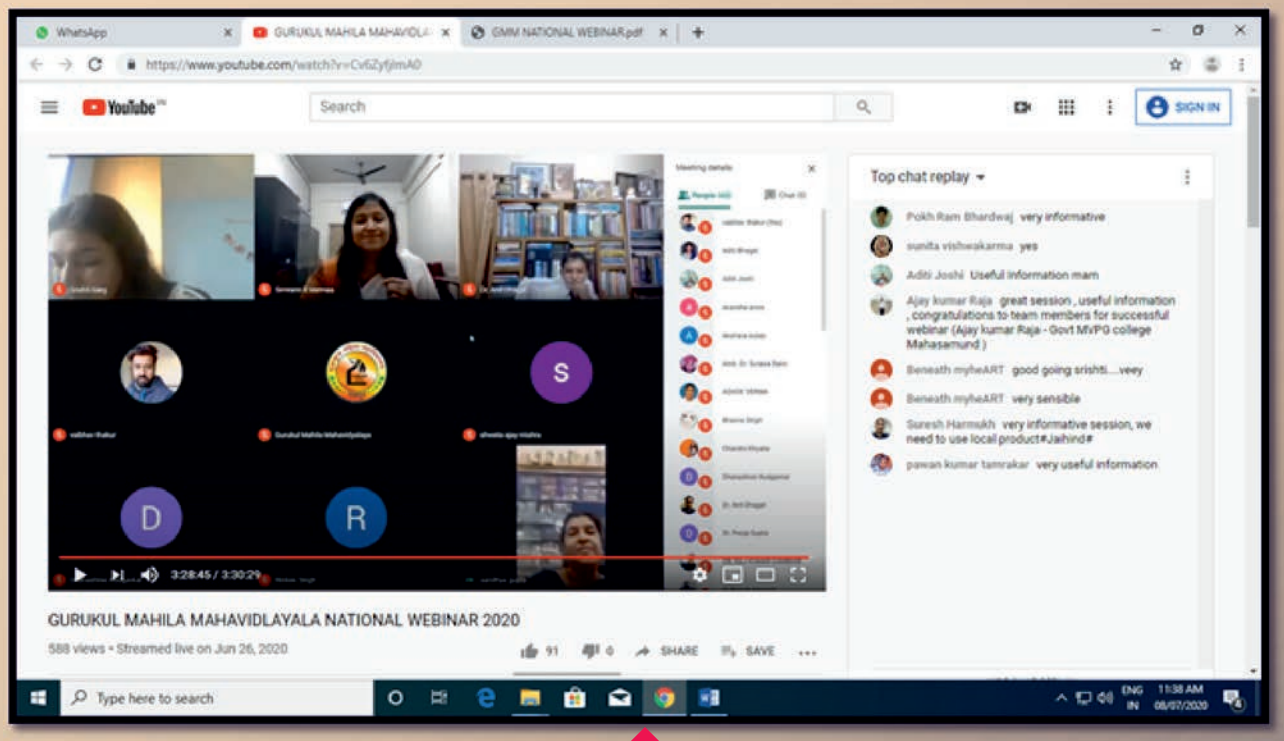
YouTube
Search
SIGN IN
Top chat replay
Pokh Ram Bhardwaj very informative
sunita vishwakarma yes
Aditi Joshi Useful information mam
Ajay kumar Raja great session , useful information , congratulations to team members for successful webinar (Ajay kumar Raja - Govt MVPG college Mahasamund)
Beneath myheART good going srishti....veey
Beneath myheART very sensible
Suresh Harmukh very informative session, we need to use local product#Jahind#
pawan kumar tamrakar very useful information
GURUKUL MAHILA MAHAVIDLAYALA NATIONAL WEBINAR 2020
588 views • Streamed live on Jun 26, 2020
SHARE
SAVE
Type here to search

परीक्षाफल 2020-21

वाणिज्य संकाय

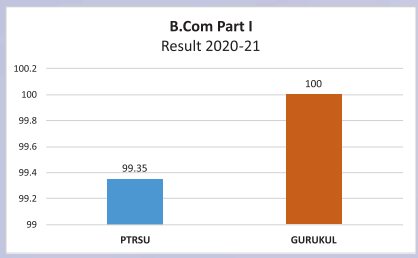

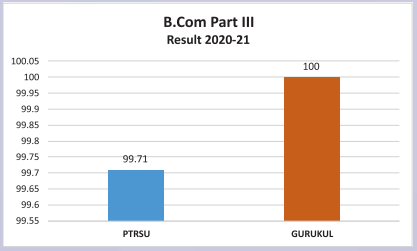

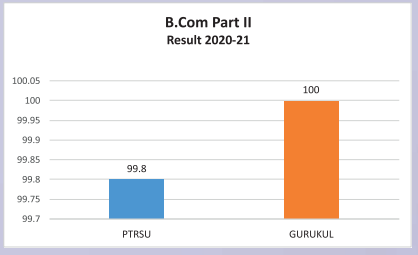

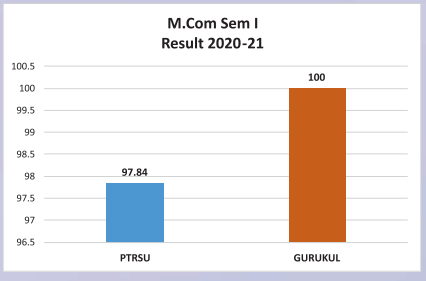

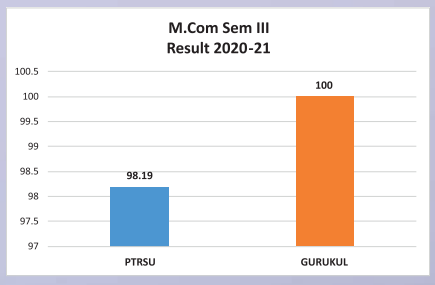

कंप्यूटर संकाय

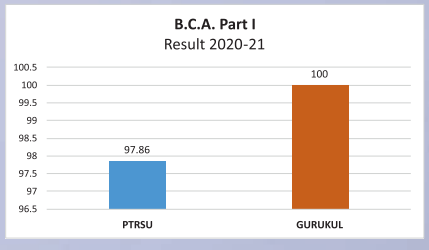

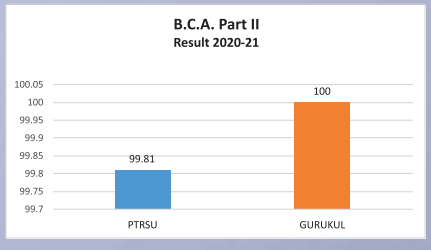

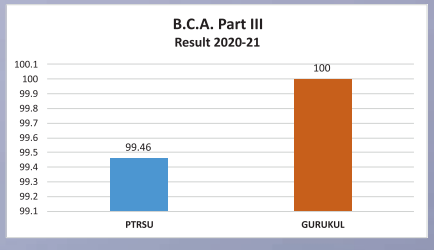

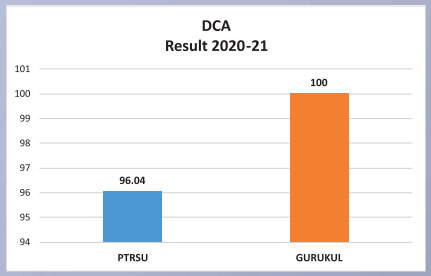

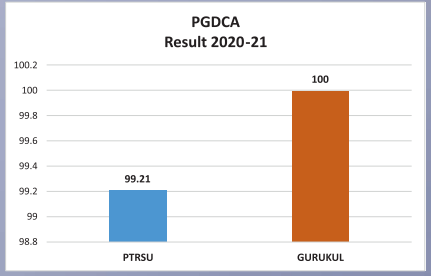

विज्ञान संकाय

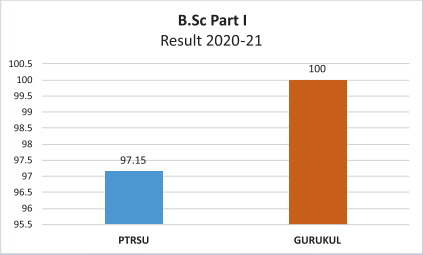

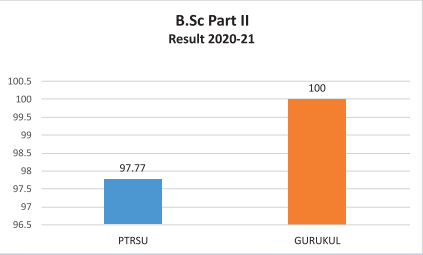

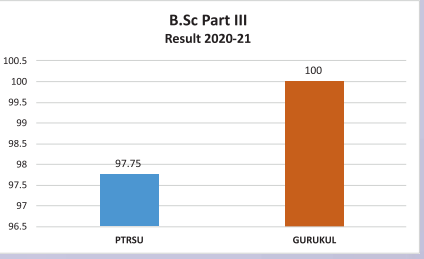

शैक्षणिक उपलब्धि- सत्र 2020-21

सर्वाधिक अंक (वाणिज्य संकाय)

कु. खतिजुल कुबरा
बी.काम अंतिम वर्ष

71.17%

सर्वाधिक अंक (विज्ञान संकाय)

कु. शीतल मिश्रा
बी.एस.सी. अंतिम वर्ष

79.90%

सर्वाधिक अंक (कंप्यूटर संकाय)

कु. श्रुति भोगल
बी.सी.ए. अंतिम वर्ष

75.47%

महाविद्यालय परिवार 2021-22

बैठें हुए (दायें से बायें) :- डॉ. सीमा चन्द्राकर, डॉ. अमिता तेलंग, डॉ. वंदना अग्रवाल, डॉ. संध्या गुप्ता (प्राचार्य), डॉ. राजेश अग्रवाल, श्रीमती कविता सिलवाल, डॉ. पद्मा सोमनाथे।

प्रथम पंक्ति खड़े हुए (दायें से बायें) :- डॉ. सिमरन वर्मा, डॉ. दीपशिखा शर्मा, श्रीमती रुकमणी दिग्रस्कर
श्रीमती रात्रि लहरी, कु. संध्या जायसवाल, श्रीमती टीनु दुबे, कु. अंशिका दुबे, कु. तारा क्षत्री, श्रीमती रेणु गिडियन, डॉ. रिन्कु पांडे

द्वितीय पंक्ति खड़े हुए (दायें से बायें) :- कु. पुनम कंटकर, कु. देवश्री वर्मा, कु. मान्या शर्मा, श्रीमती
ज्योति वर्मा, कु. अंजली देवांगन, श्रीमती सोनल पाण्डा, डॉ. अनुराधा गुप्ता, कु. राजनंदिनी साहू, डॉ. रैनी अग्रवाल, श्रीमती अदिति जोशी,

तृतीय पंक्ति खड़े हुए (दायें से बायें) :- श्री गौकरण साहू, श्री छविराम साहू, श्री प्रवीण बंछोर,
श्री शैलेन्द्र यादव, श्री वैभव सिंह ठाकुर, श्री सतीश तिवारी, श्री मनोज कुमार साहू, श्री प्रशांत पांडे, श्री कमलेश्वर निर्मलकर

छात्रसंघ पदाधिकारी सत्र 2021-22

अध्यक्ष
पायल नामदेव
एम.कॉम तृतीय सेमेस्टर

उपाध्यक्ष
गीतांजलि धनगर
एम.कॉम प्रथम सेमेस्टर

सचिव
आचंल क्षत्रीय
बी.एस.सी अंतिम

सहसचिव
शशि साहू
बी.सी.ए द्वितीय

महामारी और मक्कारी

कलयुग में अभी क्या बुरा दौर चल रहा है...
इंसान के जीते-जी भी, मरने पे गौर चल रहा है...
कौन मर रहा है, कौन जूझ रहा है कोई फर्क ही नहीं...
क्योंकि यहां मंदिर-मस्जिद, दिल्ली-लाहौर चल रहा है...
दिनभर चुनावी रैली, शाम को दो गज दूरी रखो...
ये नेताएं बोल रहे है, कोरोना का माहौल चल रहा है...
खून सूख रहे हैं खाने को दो-टूक निवाले नहीं...
इज्जत रखके दर पर किसी के उसका घर चल रहा है...
इंसानियत की नियत भी क्या भयावह हो चुका है...
अब तो मदद के नाम पे भी गोरखधंधा चल रहा है...

डिम्पल देवांगन
बी.कॉम. फाइनल

जिंदगी और मौत

जिंदा थे तो किसी ने पास नहीं बिठाया,
अब खुद मेरे चारों ओर बैठे जा रहे हैं।
पहले किसी ने मेरा हाल नहीं पूछा,
अब सभी आंसू बहाए जा रहे हैं।
एक रूमाल किसी ने भेंट न किया जब हम जिंदा थे
अब शालें और कपड़े उपर से चढ़ाये जा रहे हैं,
सबको पता है कि अब यह उसके काम का नहीं,
मगर फिर भी बेचारे दुनियादारी निभाये जा रहे हैं।
कभी किसी ने एक वक्त का खाना नहीं खिलाया,
अब देशी घी मेरे मुंह में डाले जा रहे हैं।
जिंदगी में एक कदम भी साथ न चल सका कोई,
अब फूलों से सजाकर कंधे पे उठाये जा रहे हैं।
आज पता चला कि मौत जिंदगी से कितनी बेहतर है।
हम तो बेवजह जिंदगी की चाहत किये जा रहे हैं।।

दुर्गा पटेल
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

Covid-19 Effects on Students Life

I want to share my experience on COVID-19 lockdown and unlock for student's life. During this Corona virus time as being students, have advantage and disadvantages. I will initially happy about virus because there was lockdown all over India, there were no schools & colleges, had an ash life initially enjoying all the day with watching movies, painting etc. Slowly taking online classes, which feels better. After a month came to know that his virus is not blessing to students but foreshadow of student's further life to adjust online mode of education. Descrbing the few of advantages and disadvantages during COVID-19 pandemic.

Advantages : School and colleges holidays : Students can use their quality time in studying and other activities in which they are interested.

Time of spend with family : Best time to spend with grandparents, parents and other relatives.

Saving time : Saving time to avoid transportation, sports, chatting with friends. We got more time for self study avoiding movies & playing online.

Disadvantages : There are significant disadvantages. There is huge loss in jobs, lives the economy of country.

Online classes affect the eyes due to long hours in front of screen. Small children do not have the ability to sit for longer time to study online. Lots of poor students do not have access laptops & computers. There were no exams, students were given marks by internals which will affect their careers in future.

Devika Sahu
B.Sc. Final

दो घड़ों की कहानी

नदी किनारे एक छोटा सा गाँव बसा हुआ था। नदी, गाँव के लोगों के लिए पानी का प्रमुख स्त्रोत थी। लेकिन जब बरसात का मौसम आया और गाँव में कई दिनों तक घनघोर बारिश हुई तो नदी में बाढ़ आ गई। मकान पानी में डूब गए, लोगों को सुरक्षित स्थानों की ओर भागना पड़ा।

बाढ़ के पानी में लोगों के घरों की कई चीजें बहने लगी। उनमें दो घड़े भी थे। एक पीतल का घड़ा था और मिट्टी का। दोनों ही घड़े पानी में खुद को बचाने का प्रयत्न कर रहे थे। पीतल के कठोर और मजबूत घड़े ने जब मिट्टी के कमजोर घड़े को संघर्ष करते देखा तो सोचने लगा कि मिट्टी का ये कमजोर घड़ा आखिर कब तक खुद को डूबने से बचा पाएगा? मुझे इसकी सहायता करनी चाहिए। उसने मिट्टी के घड़े से कहा, 'मित्र सुनो!', तुम मिट्टी के बने हो बस पानी में अधिक दूर तक नहीं जा पाओगे और डूब जाओगे। मेरी बात मानो और मेरे साथ रहो। मैं तुम्हें डूबने से बचा लूंगा। मिट्टी के घड़े ने पीतल के घड़े को देखा और उत्तर दिया, मित्र! तुम्हारी सहायता के प्रस्ताव के लिए धन्यवाद! लेकिन मेरा तुम्हारे आस-पास रहना मेरी सलामती के लिए उचित नहीं है। तुम ठहरे पीतल के बने घड़े और मैं मिट्टी का घड़ा। तुम बहुत कठोर और मजबूत हो। अगर तुम मुझसे टकरा गए तो मैं चकनाचूर हो जाऊंगा। इसलिए तुमसे दूर रहने में ही मेरी भलाई है। मैं स्वयं ही खुद को बचाने का प्रयास करता हूँ। भगवान ने चाहा तो किसी तरह किनारे तक पहुँच ही जाऊँगा। इतना कहने के बाद मिट्टी का घड़ा दूसरी दिशा में बहने का प्रयत्न करने लगा और धीरे-धीरे पानी के बहाव के साथ ही नदी किनारे पहुँच गया। वहीं दूसरी ओर पीतल का भारी घड़ा भी प्रयत्न करता रहा, लेकिन नदी के पानी के तेज बहाव में खुद को संभाल नही पाया। उसके पानी भर गया और वह डूब गया।

इसकी यही सीख है कि विपरीत गुणों की अपेक्षा एक समान गुण वाले अच्छी मित्रता कायम कर पाते हैं।

मधुरिमा बघेल
बी.कॉम. फाइनल

लक्ष्य और आत्मविश्वास

एक व्यक्ति बहुत कुछ कर सकता है किन्तु उसकी सारी उपलब्धि बेकार हो जायेगी, यदि उसे अपने लक्ष्य की जानकारी न हो, इसलिए प्रत्येक मनुष्य का अपना जीवन-दर्शन होना चाहिए। इसके बिना प्रगति असंभव है। साथ ही साथ किसी भी काम को करने के लिए दृढ़ आत्मविश्वास होना बहुत जरूरी है जैसे- 'मैं इस कार्य को करूंगा', 'मुझे निश्चय ही इस कार्य को करना है', इस तरह का दृढ़ आत्मविश्वास ही मानव-जीवन में सफलता का रहस्य है। भगवान बुद्ध ने इसे दूसरा महत्वपूर्ण तत्व कहा है। यह सफलता के लिए दूसरा आवश्यक तत्व है, जिसे प्रत्येक को अपने जीवन में उतारना चाहिए। एक व्यक्ति जब जीवन के किसी भी क्षेत्र में अपने को व्यक्त करता है उसे अपनी वाणी के उपर नियंत्रण रखना चाहिए। हमें अपने चक्षुओं पर भी उचित नियंत्रण रखना चाहिए। जिन वस्तुओं को देखने से हमारे मन पर अशुभ प्रभाव पड़ता है जिन बातों से हमारे मन पर बुरा प्रभाव पड़ता है उन्हें नहीं देखना चाहिए। जो बातें हमारे मन पर बुरा प्रभाव डालती है उनसे दूर रहना चाहिए। बहुत से लोग अपने शरीर को मजबूत बनाने के लिए कई तरह के शारीरिक व्यायाम करते हैं किन्तु मानव अस्तित्व सिर्फ शारीरिक नहीं है। मानव अस्तित्व शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक तीनों है, शारीरिक व्यायाम भी अच्छा है किन्तु इसके साथ-साथ हमें मानसिक व्यायाम तथा आत्मिक व्यायाम भी करना चाहिए। अगला महत्वपूर्ण तत्व है, 'अच्छे तरीके से कार्य करना।' जब भी हम कोई कार्य शुरू करते हैं, तब हमें बहुत कुशलतापूर्वक और सुंदर तरीके से उसका समापन भी करना चाहिए। हमें किसी भी कार्य को अपूर्ण अवस्था में नहीं छोड़ना चाहिए। अगला उपदेश है स्मृति, स्मृति क्या है? ईष्टमंत्र का जाप हमेशा दोहराते रहना चाहिए। हमें कभी भी परमात्मा का स्मरण नहीं भूलना चाहिए। यह हमारा परम कर्तव्य है। जब हम किसी संगीत की उत्कृष्ट, मनोरम स्वर लहरी को सुनाते हैं, तब हमारा विषयी मन उस संगीत की उत्कृष्ट, मनोरम स्वर लहरी को सुनते हैं, तब हमारा विषयी मन उस संगीत में खो जाता है।

यामिनी साहू
पीजीडीसीए

योग- युक्त व्यसन- मुक्त भारत

'बड़े भाग्य मानुष तन पाया, सुर सद्रग्तंथही गवा'

उपरोक्त पंक्ति में पूज्य तुलसीदास जी ने मनुष्य के शरीर को देवताओं के लिए भी दुर्लभ बताया है। हमारे ग्रंथो में तैंतीस करोड़ देवी-देवताओं की बात कही गई है। क्या वास्तव में तैंतीस करोड़ देवी-देवता होते हैं? परन्तु इतने देवताओं का नाम कही देखने में नहीं आता। मुझे लगता है कि प्राचीन काल में जब भारत की जनसंख्या तैंतीस करोड़ रही होगी, उस समय समस्त लोगों का आचरण, विचार, कर्म एवं चरित्र देवी-देवताओं जैसा रहा होगा और उन्हीं के लिए तैंतीस करोड़ देवी-देवता जैसे उपवाक्य कहा गया होगा। अन्य धर्मों में भी पूर्वकालिक मानव के लिए आचरण का वर्णन मिलता है, उसे ध्यान में रखकर जब हम वर्तमान मानव व सजाम पर दृष्टिपात करते हैं तो काफी दुःख होता है। 'वसुदैव कुटुम्बकम्' की भावना रखने वाले भारत के लोग आज अपने परिवार को एकजुट नहीं रख पा रहे हैं। संयुक्त परिवार का अस्तित्व लगभग समाप्त हो चुका है।

'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का उद्घोष करने भारत के लोग आज अपने ही परिवार के सदस्यों के प्रति ईर्ष्या एवं जलन का भाव रखते हैं। चारित्रिक रूप से हम इतने कमजोर हो चुके हैं कि हमारे अपने ही घरों की बेटियाँ हमसे सुरक्षित नहीं है। अस्पताल की भींड़ हमें बता रही है कि शारीरिक रूप में हम कितने अस्वस्थ हो चुके हैं।

उपरोक्त सारी समस्या का जड़ यह है कि हम अपने प्राचीन जीवन पद्धति से दूर होते जा रहे हैं। हमारी संस्कृति जो हमें देवताओं के समकक्ष खड़ा करती थी वह थी हमारी योग युक्त आध्यात्मिक जीवन पद्धति। पहले योग व्यक्ति जीवन का एक अनिवार्य अंग था। वह नियमित योग करता था, योग के सूत्रों को जीवन में आत्मसात करता था तथा एक तपस्वी एवं मनस्वी का जीवन जीता था। यदि योग को संपूर्णता में हम अपने जीवन में अंगीकार करें तो आज भी हमारा आचरण देव तुल्य हो सकता है। संपूर्णत: मेरा तात्पर्य मात्र आसन एवं प्राणयाम से नहीं बल्कि यम, नियम, आसन, प्राणयाम, प्रत्याहार, धारण, ध्यान एवं समाधि से है। साथ ही साथ ज्ञान योग, कर्मयोग एवं भक्ति योग भी हमारे जीवन में गहराई से समायी हुई होनी चाहिए ।

कहा गया है कि 'जैसा खाए अन्न वैसा बने मन' मित्रों सर्वविदित है कि अन्न से मन, मन से विचार एवं विचार से कर्म होते हैं। हमारे चिंतन एवं कर्म का सीधा संबंध हमारे भोजन से है। तामसी भोजन ग्रहण कर हम सात्विक मन एवं विचार की कल्पना नहीं कर सकते हैं। यह बिल्कुल असंभव है। प्राचीन काल में व्यक्ति भोजन को प्रसाद बनाकर पवित्र मन से ग्रहण करता था और इसलिए उसकी बुद्धि भी सात्विक होती थी। शराब हमारे समाज के लिए एक अभिशाप है। शराब एवं किसी भी प्रकार के नशा से हमारे स्वास्थ्य एवं चिंतन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। आज हमारी जनसंख्या का बहुत ही बड़ा वर्ग नशा की गिरफ्त में है। जब तक नशा व्यक्ति के जीवन से अलग नहीं होगा, व्यक्ति आसुरीवृत्ति से अलग नहीं हो सकता। शासन के लिए इस दिशा में सार्थक पहल करें। शराब बिक्री के राजस्व से निर्मित राज्य की ऐसी सुंदर सड़के किस काम के जिस पर शराबी बेहोश होकर चलते हो या सड़क किनारे किसी नाले में पड़े हो।

अतः यदि हम भारत को उसके मूल स्वरूप में पुनः स्थापित करना चाहते हैं तो हमें भारत को 'योगयुक्त एवं व्यसन मुक्त' भारत बनाना होगा।

जस्मी साहू
बी.एस.सी प्रथम

Lives during the pandemic of COVID-19

Corona virus disease, (COVID-19) 'The Pandemic', which originated in Wohan city of China and quickly spread to various countries including our nation 'India'. As on May 28th, 2020, there were about 56,342 positive cases in India.

During this pandemic people are facing many difficulties of food, safety, hygiene, hospital and much more problems. In the beginning of the pandemic people were very afraid of the virus COVID-19 that they started losing their patience and mental balance, it was natural because there are many news updates of dead people and infected by COVID-19.

The situation was being out of control so, govt. declared lockdown in different states and cities which also broke the patience of people. The lockdown was to safeguard the people from being infected of virus but many people were affected badly that they lost their hope to being alive, many criminal activities also took place during this period which made the situation worst, and most of the sites of media exaggerated this situation which lead to demotivation and hopelessness in humans. Many of them started to break the rules and regulations made for their safety.

But slowly and steadily the situation is being in control with the help of government and media. As government helped in providing food, safety and hygiene at a good level, media also played a vital role to make the situation under control, where in the beginning it exaggerated the situation. Media and social networking sites has major influence successful in convincing and motivating the people that they can fight and survive in such pandemic situation.

At the starting stage this pandemic “COVID-19” school the roots of world form economic, political and social life. But now people have understood that this 'Pandemic' is nothing if we co-operate all the rules and regulations regarding to precautions from COVID-19.

People have included mask and sanitisers in their lifestyle and getting vaccinated, with all these protection and precautions people are starting to live their lives as before with a positivity of being safe and keep others people safe.

Anupam Rozi Kujur
B.Com. Final

यादें...

चाँदनी पटेल
बी.एस. तृतीय

ये कॉलेज लाईफ भी कितनी अजीब है ना तीन साल कैसे बीत गये पता ही नहीं चला। इन प्यारे दोस्तों और यारों के बीच जैसे हो साहिल और किनारों के बीच। ये गुरुकुल की यादें और कितने खूबसुरत से जो कभी थे पराये यहाँ हो गये सब अपने। वो सिर्फ अटेंडेन्स के लिये क्लास जाना और पीछे बैठ के मस्ती करना। जब प्रोफेसर अपनी तरफ देखे तो अटेंटिव सा लूक देना। वो जूलॉजी वाली मैम का प्यार से समझाना और केमेस्ट्री वाली मैंम का जोरों से डाँटना। हॉस्टल में ढेर सारी नौटंकी करना जो बेवजह रात भर निशाचर की तरह जागना। वो गुरुकुल की टीचर से फ्रेंडशिप, वो गुरुकुल की नियम और संस्कारें। वो गुरुकुल की यादों की गहरी बांधे, कॉलेज छोड़ जा रही हूँ मैं, यादें जोड़ जा रही हूँ मैं।

वो माँ है, जीवन खुशियों से भर देती है

वो माँ है, जीवन खुशियों से भर देता है...
तकलीफें हैं, पर बताती नहीं,
कभी खुल कर प्यार जताती नहीं
दिल दुखता है उसका भी बिछुड़ने पर,
पलकों से पी जाती हर आंसू, कभी दिखाती नहीं।
स्नेह से हर आंसू वो मोती कर देती है।
वो माँ है, जीवन खुशियों से भर देती है...
वो हंसती है, खिलखिलाती है,
हाँ, बेवजह भी गुनगुनाती है,
वक्त, हालात, जज्बात, सब छोड़...
कभी-कभी फिर से बच्ची बन जाती है।
रंग मासूमित के हमारे गालों पर भी मल देती है
वो माँ है, जीवन खुशियों से भर देती है...
हर रिश्ते हर फ़र्ज बखूबी निभाती है,
सहेजने, संजोने की वक्त उसे अच्छे से आती है,
वक्त, बेवक्त के मुश्किल तूफानों में,
वो चट्टानों सी अड़कर, सबकुछ सह जाती है।।
हर मुश्किल हर दुःख बस मुस्कुराकर हर लेती है,
वो माँ है, जीवन खुशियों से भर देती है...
असफलता से अपनों की,
होती है वह निराश कभी,
पर जानती है वो परवरिश,
त्यागा नहीं विश्वास कभी।
जानती है वो गर यह नहीं तो उड़ने को और आसमाँ है,
कहती, हारा कब तू कुछ बेटे, अभी भी पास तेरी माँ है,
स्नेह सागर लूटाकर, दुःख अपने आँचल में भर लेती है,
वो माँ है, जीवन खुशियों से भर देती है।।

वीणा साहू
बी.एस.सी. तृतीय

Love yourself or the art of self acceptance

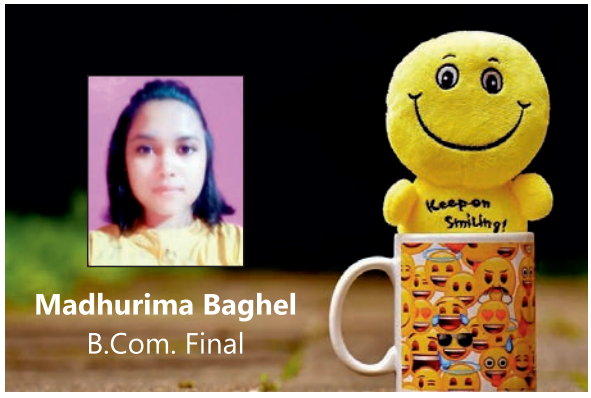

To love yourself
means to accept yourself as
You are and to come to terms
with those aspects of yourself
that you can not change.
It means to have self-respect,
a positive self image, and unconditional
self-acceptance. Needless to say, it
does not mean being arrogant,
conceited or thinking that you are
better than anyone else.
It means having a healthy regard
for yourself knowing that you
are a worthy human being.
It is important to remind ourselves
that no one is perfect.

जैसे को तैसा

किसी नगर में एक बनिया रहता था। उसका एक लड़का था। उनकी एक छोटी सी दुकान थी। उससे जो मिलता उसी में अपनी गुजर बसर कर लेते। एक दिन की बात है कि बनिया चल बसा। लड़के ने सोचा कि अब यहां से परदेश जाकर धन कमाना चाहिए। उसके पास माल भत्ता तो कुछ था नहीं मन भर की लोहे की एक तराजू थी उसे लेकर वह पड़ोस के एक महाजन के पास गया और बोला- काका! मैं परदेश जा रहा हूँ, आप इस तराजू को रख लीजिए। लौटकर आउंगा तब ले लूंगा।

महाजन ने कहा- 'ठीक है, छोड़ जाओ।' बनिए के लड़के ने तराजू उसको सौंपी और परदेश रवाना हो गया। वहां उसने खूब कमाई की। जब बहुत-सा धन इकट्ठा हो गया तो वह अपने नगर लौट आया। अचानक उसे तराजू की याद आई। वह महाजन के पास गया और बोला- काका! मेरी तराजू दे दीजिए।

तराजू बढ़िया थी, महाजन को लालच आया, बहुत ही गंभीर होकर उसने कहा- बेटा मुझे बड़ा दुःख है कि तुम्हारी तराजू को चूहा ले गया और उसने उसे खा लिया। बनिए का लड़का चतुर था। वह समझ गया कि महाजन की नीयत में बदी आ गई है। उसने आगे कुछ कहना ठीक नहीं समझा और चुपचाप घर चला गया।

कुछ दिन बाद वह महाजन के पास गया। बोला- काका! मैं गंगा नहाने जा रहा हूँ। जरा अपने लड़कों को साथ भेज दीजिए। थोड़ी देर में लौट आऊंगा।

महाजन तैयार हो गया। उसने अपने लड़कों को बुलाकर कहा कि उसके साथ चले जाओ। दोनों लड़के चल दिए। आगे जाकर बनिए के लड़के ने महाजन के लड़के को एक कोठरी में बंद करके ताला लगा दिया और घर आ गया। महाजन ने उसे अकेले देखा तो पूछा- मेरा लड़का कहाँ है? वह तो तुम्हारे साथ गया था।

बनिए के लड़के ने मुंह बनाकर उत्तर दिया- 'क्या बताऊँ काका! हम दोनों जा रहे थे कि अचानक एक चील आई और आपके लड़के को उठाकर ले गई और खा गई। महाजन को काटो तो खून नहीं। वह बड़े ताव में बोला- क्या कहते हो कंही चील भी लड़के को उठाकर ले जा सकता है। महाजन सारी बात समझ गया। वह सीधे राजा के पास गया। उसने राजा से फरियाद की- मालिक! बनिए का लड़का कहता है कि मेरे लड़के को चील उठाकर ले गई और खा गई।

राजा ने फौरन बनिए के लड़के को बुलवाया। वह आया। राजा के पूछने पर उसने सारी बात कह सुनाई। सुनकर राजा को बड़ी हंसी आई। उसने महाजन से कहा- हाँ ठीक कहता है, जहाँ का चूहा एक मन लोहे की तराजू को ले जाकर खा सकता है वहां की चील भी तुम्हारे लड़के को उठाकर ले जा सकती है।

महाजन के सामने अब कोई चारा न रहा। उसने तराजू लाकर बनिए के लड़के को दे दी। बनिए के लड़के ने महाजन के लड़के को लाकर उसके हवाले कर दिया।

संध्या कुशवाहा
बी.कॉम. कम्प्यूटर द्वितीय

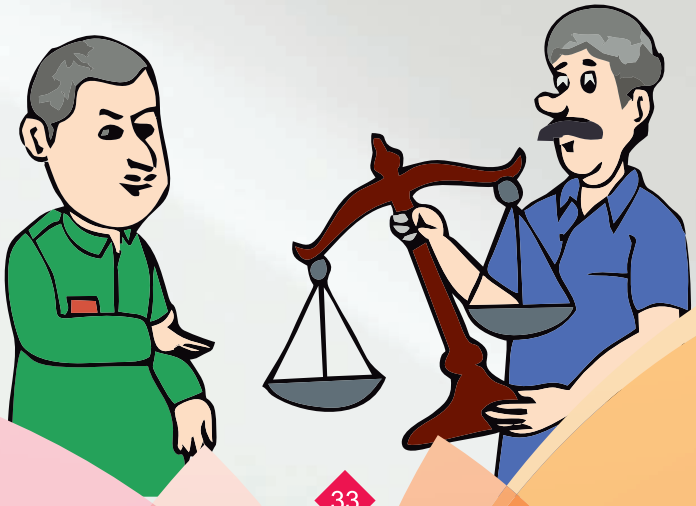

If keyboards could talk

The only part in the computer system which is capable of conveying thoughts to the ever complicated wired machine's brain by sending our messages in the form of inked words would create an interesting havoc if its buttons would actually speak up the words being pressed upon them!!

If keyboards could talk, it would have told you and held you stronger when you were typing all those vulnerable words to the world.

If keyboards could talk, it would have told you so many secrets that go from yours to someone else.

If keyboards could talk, it would have wished you good morning and good night when the world forgets to wish you, make you smile and start and finish off your day with all of yourself.

If keyboards could talk, it would have told you everything when you were about to give up, about to break up and about to shatter.

If keyboards could talk, it would have told you how much the beauty of your soul empowers the world and how many every soul, touching your words look forward to be like you, just like you.

If keyboards could talk, it would have backspaced all the inappropriate slangs, incomplete sentences, misplaced alphabets you ever wanted to scream just because you felt so miserable in those dark nights.

If keyboards could talk, it would have killed all the dilemmas you ever felt about your courage and your worth.

If keyboards could talk, it would have made you sleep with all those words, you waited entire life to hear and cuddle up

If keyboards could talk, it would have fought for you, on your behalf whenever the world went rude to you.

If keyboards could talk, it would have melted you heart with all the lines that makes you blush and you dance in a rush.

If keyboards could talk, it would have told you every story it went through and how it still wants to be written by, once again all over again.

If keyboards could talk, it would have promised you forever, in Sun and rain, in warmth and cold, in high and lows.

If keyboards could talk, it would have reminded you every single day, your colour is the best, your body is the fittest, your soul is the toughest and your mind is the brightest!!

Riya Khandelwal
BCA Final

कोशिश कर हल निकलेगा

आज नही तो कल निकलेगा, अर्जुन के तीर सा
मरूस्थल से भी जल निकलेगा,
मेहनत कर पौधों को पानी दे
बंजर जमीन से भी फल निकलेगा
ताकत जुटा हिम्मत को आग दे
फौलाद का भी बल निकलेगा
जिंदा रख दिल में उम्मीदों को
गरल के समंदर से भी गंगाजल निकलेगा
कोशिश जारी रख कुछ कर गुजरने की
आज थमा-थमा सा चल निकलेगा

महानता कहाँ पैदा होती है उसे तो गढ़ना पड़ता है
सिकंदर वही रचे जाते हैं जहाँ लड़ना पड़ता है
कई लोग खपे हैं, अपने अब्दुल को
हमारा कलाम बनाने में
कई युग जुटे हैं सपने प्रतिकूल को
प्यारा अंजाम दिलाने में।

हो गई है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए
इस हिमायल से कोई गंगाजल निकलनी चाहिए
आज यह दीवार परदों की तरह हिलने लगी
शर्त लेकिन थी ये बुनियाद हिलनी चाहिए
हर सड़क पर हर गली में हर नगर,
हर गाँव में हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
सारी कोशिश है कि सूरत बदलनी चाहिए
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही
हो कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए।

कितना नम्बर लाये हो, कौन सा कॉलेज पाए हो
किस कोर्स से आगे जाओगे
कितना पैकेज पाए हो,
सच कहता हूँ, सनक जाता हूँ
कभी-कभी भड़क जाता हूँ
फिर समझ आया ये मायावी खेल
तुम अकेले नहीं धूम मचाये हो।

जीवन की तन्हाई में या यौवन की अंगड़ाई में,
अटकी है जान सबकी नौकरी वाली खाई में
इस भाई के कई भक्तगण है,
लेकिन सीटें काफी कम है,
इस सच्चाई को क्या ज्ञान
करी लगा दो हिम्मत पढ़ाई में।

नर हो, न निराश करो मन को,
कुछ काम करो, कुछ काम करो,
जग में रहकर कुछ नाम करो
यह जन्म हुआ किस अर्थ यह
समझो इसमें यह व्यर्थ न हो
कुछ तो उपयुक्त करो तन को
नर हो, न निराश करो मन को।।

बचपन निकला जन-गण-मन में
था जीवन ढीला बिना टेंशन में
इंटर से जो किस्सा चल निकला
लगी आग उस प्यासे मन में।

ज्योति दीप
बी.कॉम द्वितीय

पापा!

जिनके बिना अधूरी है, मेरी जिंदगी की दास्तां
एक ऐसा नाम है वो, हर कड़ी धूप में मेरी छाँव है वो
उस खुदा के बदले, जिन्हें मैंने पाया है
वो कोई और नहीं, मेरे पापा है।
हर परिस्थितियों में ढलते देखा है
हर मुश्किलों से लड़ते देखा है
खुद की फिक्र किए बिना पापा को
हमारे लिए एक-एक रूपया जोड़ते देखा है।
लेट नाइट ऑफिस में, ओवर वर्क करके घर आना
पूछने पर, ट्रैफिक का बहाना बताना।
हमारे लिए इतना दर्द, कैसे सह लेते हैं।
इतनी परेशानियों में भी, मुस्कुरा कर कैसे रह लेते हैं?
खुद से पहले जिन्हें, हमारी फिक्र होती है
खुद की जरूरत से पहले
जिन्हें हमारी जरूरत की फिक्र रहती है
जिनकी खुशियों में, सबसे पहले हम होते हैं।
ऐसे पापा के प्यार के किस्से
बच्चों के लिए कहाँ खत्म होते हैं
मेरी छोटी सी गलती पे, दुनिया उंगली उठाती है
पर मेरे पापा की आवाज
उसे माफ कर सही राह दिखाती है
हर परिस्थितियों में, कैसे ढलते हैं
ये आपसे सीखा है, कोई चांद भी लाके दे
फिर भी वो आपके खिलौने के सामने फिका है।
इस परिवार की ज्ञान हो आप
हमारी खुशियों की छाँव हो आप
रौनक है जिनके रहने से घर में
उस परिवार का नाम हो आप।

यामिनी साहू
बी.एस.सी., तृतीय

सकारात्मकता लक्ष्यों का आधार

सकारात्मकता एक ऐसा आधार है जिससे हम जीवन की हर चुनौतियों का सामना कर सकते हैं। यह एक ऐसा कंपन है जिससे हमारी जीवन में बदलाव आने लगते हैं पर कैसे? जब भी हमारे जीवन में चुनौतियां आती है हमें वह सारी बातें याद आने लगती है जो लोगों ने हमसे कही थी जैसे- तुम यह काम नहीं कर सकते, यह काम बहुत मुश्किल है, यह काम तुम्हारे स्तर का नहीं और कुछ तो यह भी कहते हैं कि तुम यह काम नहीं कर सकते।

इस समय हम नकारात्मकता से भर जाते हैं और हमें अपने लक्ष्यों की राह पर चलने से डर लगने लगता है इस समय कुछ लोग खुद को सकारात्मकता रखने की कोशिश करते हैं लेकिन वह खुद को ज्यादा देर तक सकारात्मक नहीं रख पाते पर जो लोग अपनी उन चुनौतियों के दौरान उम्मीदों के जरिए खुद को बार-बार सकारात्मक रखने की कोशिश करते रहते हैं और अपना साहस बनाए हुए होते हैं। वह अपनी स्थिति से उबर कर अपने लक्ष्यों को पा लेते हैं। जब हम सकारात्मक रहते हैं तो वह हमारे दिमाग से जीवन में उतरने लगता है और हमें लक्ष्यों तक पहुंचता है। लगातार सकारात्मकता रखने वाले लोग अवश्य ही सफल होते हैं।

सकारात्मक सोच, लक्ष्य, साहस और लगातार मेहनत के जरिए जीवन के हर लक्ष्यों को पाया जा सकता है।

प्रियंका यादव
बी.एस.सी. तृतीय

देशभक्ति कविता

यह उन दिनों की बात थी
चुनौतियों से भरी हर रात थी
जब वीर जवानों ने हमारे
यह संदेश भिजवाया था,
शहीद होकर अमर हो गए
और देश आजाद करवाया था।
हाँ, यह देश गुलजार है,
हवा में इसके प्यार है
छोटे-बड़े सब अपने हैं,
खुली आंखों में भी सपने हें
हर परिंदा आजाद है,
हर बूंद में प्यास है
हर रस में मिठास है
रंगमंच है खुशियों का
और भविष्य का भी अंजाम है
ज्यादा या थोड़ा ही सही पर
दिल में मौजूद कलाम है।

रेश्मी गुप्ता
पीजीडीसीए

अनमोल वचन

- आप अपने काम की जिम्मेदारी के लिए जितने तैयार रहते हैं, उतने ही विश्वसनीय बनते हैं।
- तूफान में कश्तियाँ और अभिमान में हस्तियाँ मिट जाती है।
- समय का अंतिम हल माफी ही है, कर दो या मांग लो।
- परिस्थितिकी पाठशाला ही इंसान को वास्तविक शिक्षा देती है।
- मेरा लक्ष्य दूसरों से बेहतर होना नहीं बल्कि मैं अभी जो हूँ उससे बेहतर होना है।
- अगर आप किसी का अपमान कर रहे हैं तो वास्तव में आप अपना सम्मान खो रहे हैं।
- शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है एक शिक्षित व्यक्ति हर जग सम्मान पाता है।
- जब तक किसी काम को किया नहीं जाता तब तक वह असंभव लगता है।
- शिक्षक और सड़क दोनों एक जैसे हैं, खुद जहाँ है वहीं पर रहते हैं मगर दूसरों को उनकी मंजिल तक पहुंचा ही देते हैं।
- अपने लक्ष्य को इतना महान बना दो कि व्यर्थ के लिए समय ही न बचे।

पूर्णिमा जोशी
पीजीडीसीए

सफलता का गुरुमंत्र- उड़ना है तो गिरना सीख लो

दुनिया में कोई भी इंसान इतनी आसानी से सफल नहीं होता, ठोकरे खानी पड़ती है। जब ठोकरों से डरोगे तो कभी सफल नहीं हो पाओगे, राज में चाहे कितनी ठोकरें आये अपने लक्ष्य को मत छोड़ो। ये ठोकरें तो आपकी परीक्षा लेते हैं, आपके कदम को मजबूत बनाती है ताकि जिंदगी में फिर कभी ठोकर न खानी पड़े।

एक चिड़िया का बच्चा जब अपने घोंसले से पहली बार निकलता है तो उसके पंखों में जान नहीं होती, वो उड़ने की कोशिश करता है लेकिन गिर जाता है, वह फिर से दम भरता है और फिर से उड़ने की कोशिश करता है लेकिन फिर गिरता है, वो उड़ता है और गिरता है यही क्रम चलते-चलते तब तक चलता है जब तक वो खुले आकाश में उड़ना नहीं सीख जाता है।

यही कहानी मानव की भी है, जब बच्चा सीखता है तो वह गिरने से कभी नहीं डरता है लेकिन जब यही बच्चा बड़ा हो जाता है, उसके अंदर समझ आ जाती है तो वह डरने लगता है, उसके मन में गिरने का डर आ जाता है। कभी वह इंटरव्यू में नौकरी लगेगी या नहीं सोचकर डरता है तो कभी बिजनेस कर लिया तो चलेगा या नहीं सोचकर डरता है। अगर मानव बचपन से ही डर से दूर रहे तो उसे उड़ने से कोई नहीं रोक सकता है। सफलता का मूलमंत्र है डर को पीछे छोड़कर अपने लक्ष्य तक पहुँचने से पहले प्रयास और प्रयत्न का साथ कभी न छोड़ो जब तक आप अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर लेते।

भूमिका पटेल
बीसीए, द्वितीय

मेरी माँ

आज मैं 'माँ' के बारे में क्या लिख सकती हूँ क्योंकि माँ के बारे में इस दुनिया में कोई भी शक्स नहीं लिख पाएगा। 'माँ' के बारे में लिखते-लिखते हमारी पूरी जिन्दगी भी कम पड़ जाएगी फिर भी मैं अपनी माँ के बारे में कुछ बताना चाहूंगी तो सबकी अच्छी और प्यारी होती है लेकिन मेरी माँ मेरे लिए पूरी 'दुनिया' है। उन्होंने मुझे न केवल जन्म दिया बल्कि अकेले पालन-पोषण भी किया है। उन्होंने मुझे किसी भी चीज की कमी नहीं होने दी। वह भले ही भूखी सोई लेकिन मुझे भर पेट खाना खिलाया। उन्होंने न केवल मेरा अच्छा पालन-पोषण किया है बल्कि पूरे समाज व समाज के कई बुरे लोगों की बातों से लड़कर मुझे न केवल किताबी ज्ञान दिया बल्कि अपने अनुभव की सीख से मुझे सही गलत का अंतर सिखाकर मुझे एक अच्छा इंसान बनने में भी मदद की।

मेरी माँ मेरी जिंदगी में मेरे लिए सबसे प्रभावशाली व्यक्ति है वह मेरी 'रोलमॉडल' है। 'माँ' सबसे उपयुक्त शब्द है जो मैंने अब तक सीखा है। मेरी माँ मेरे लिए मेरी 'माँ' और 'पापा' दोनो हैं। कह सकते हैं वो मेरी 'माँ-पा' है। वो कहते हैं न हर जगह पृथ्वी पर ईश्वर नहीं रह सकता इसी कारण ईश्वर ने माँ को बनाया है। हमारी चिंता तो सभी लोग करते हैं लेकिन एक माँ ही है जो पूछती है, बेटा तुने खाना खाया? मुझसे पूछा जाय तो माँ दुनिया की सबसे भरोसेमंद शक्स होती है। जिससे आप अपने दिल की हर बात साझा कर सकते हैं। मेरी माँ मेरी सबसे अच्छी दोस्त है। उनके साथ मैं अपनी सारी बातें साझा करती हूँ। मेरी माँ मेरे हर पल में साथ होती है चाहे वह सुख हो या फिर दुःख सच कहूँगी तो मेरी जिंदगी में सुख व खुशी लाने वाली मेरी माँ ही है उन्हीं से मेरी जिन्दगी आबाद है वो नहीं तो मैं नहीं। किसी शायर ने खुब कहा है कि 'तुम्हारी जिंदगी में जरा भी तकलीफ, गम और दर्द ना होता अगर तुम्हारा नसीब तुम्हारी माँ ने लिखा होता।'

विजिया कुहार
द्वितीय

मेरे पापा

मैं क्या लिखूं पापा के लिए मेरे पास शब्द ही नहीं है। पापा वो सार्थक शब्द होता है जो बच्चों के अस्तित्व के लिए बहुत महत्वपूर्ण शब्द है जिससे पूरा परिवार को बांधा जाता है। कहते हैं ना जब-जब बच्चा जन्म लेता है तो उसका पहला शब्द माँ से पूर्ण होता है और होगा भी क्यों नहीं क्योंकि माँ ही बच्चे को नौ महीने गर्भ में धारण करती है और उसके हाव-भाव को अपने अंतरआत्मा में महसूस करती है किंतु पिता अपने प्रेम में पारंगत होकर उस बच्चे को देख तो पाता है लेकिन उसके साथ रह भी नहीं पाता, खेल नहीं पाता, उसके बढ़ते कदम को देख नहीं पाता। क्योंकि उनको अपने तथा अपने परिवार का भरण पोषण जो करना होता है। पापा की जिन्दगी कांटों से भरी होती है लेकिन वो फूलों सी जिन्दगी हमें देते हैं। वह इंसान जिसे आपकी हर पल परवाह है एक इंसान को ईश्वर एक ही व्यक्ति ऐसा भेंट करता है जो आप में रहकर जीने की इच्छा रखता है अर्थात् हर पल आपकी खुशी के लिए वह सब कुछ त्याग देता है। सत्य यह है कि पापा के जैसा परवाह और कोई नहीं कर सकता। इसलिए पापा सबके लिए First Hero कहलाते हैं।

सीमा यादव
बीसीए, प्रथम

बेटियां

बेटियां शुभकामनाएं हैं,
बेटियां पावन दुआएं है।
बेटियां जीवन की,
बेटियां जातक, इतनी सी कथाएँ है।
बेटियां गुरुग्रंथ की वाणी,
बेटियां वैदिक कथाएँ है।
जिसमें खुद भगवान बसता है,
बेटियां वेतनाएं है।
त्याग, तप, गुणधर्म साहस की
बेटियां गौरव कथाएँ है
मुस्कुरा के पीर पीती है,
बेटी हर्षित व्यथाएं है।

प्रियंका तिवारी
बी.कॉम. कंप्यूटर तृतीय

क्या आप जानते हैं?

- एक इंसान के शरीर में इतना लोहा होता है कि जिससे एक इंच की कील बन सकती है।
- कोका कोला का कलर हरा होता है पर इसमें फूल कलर मिक्स के इसे ब्लैक किया जाता है।
- दुनिया का पहला कैमरा इतना स्लो फोटो खींचता था कि एक फोटो के लिए 8 घंटे तक बैठना पड़ता था।
- हमें खाने का स्वाद उसमें सलाइवा 'लार' मिलने के बाद ही आता है।
- दुनिया के 85% पौधे समुद्र के अंदर होते हैं।
- इंसान की सबसे छोटी हड्डी कान में होती है।
- 95% लोग नया पेन खरीदने के बाद सबसे पहले अपना नाम लिखते हैं।
- प्लास्टिक सर्जरी का अविष्कार भारत में हुआ है।
- सबसे ऊंची मीनार - कुतुबमीनार दिल्ली
- सबसे लंबा सड़क पूल - महात्मा गाँधी सेतु, पटना
- सबसे बड़ा पशुओं का मेला- सोनपुर, बिहार
- सबसे ऊंची चोटी - गॉडविन आस्टिली के-2
- सबसे ऊंचा बाँध - टिहरी बांध, 260.5 मी
- सबसे बड़ा रेगिस्तान- थार, राजस्थान
- सबसे बड़ा गुफा मंदिर - कैलाश मंदिर, एलोरा
- सबसे बड़ा चिड़ियाघर - जूलोजिकल गार्डन, कोलकाता
- सबसे बड़ी मस्जिद - जामा मस्जिद, दिल्ली
- सबसे लम्बी सुरंग - पीर पंजा सुरंग, जम्मू काश्मीर
- सबसे बड़ा डेल्टा - सुंदरवन डेल्टा, पश्चिम बंगाल
- सबसे लंबी नदी - गंगा नदी
- सबसे बड़ी कृत्रिम झील - गोविन्द सागर

सुषमा क्षत्री
बी.एस.सी. कम्प्यूटर द्वितीय

जीव विज्ञान की रोचक बातें

- सेक्यूइआ डेन्ड्रान विश्व का सबसे बड़ा पौधा है।
- नीला व्हेल विश्व का सबसे बड़ा जन्तु है।
- रेफ्लेसिया का पुष्प प्रकृति का सबसे बड़ा पुष्प है।
- वायरस अर्थात् विषाणु को इस पृथ्वी का प्रथम जीव माना जाता है जो कि सजीव एवं निर्जीव के बीच सेतु भी माना जाता है।
- सबसे बड़ा हृदय जिराफ में पाया जाता है।
- मनुष्य का जन्तु वैज्ञानिक नाम होमो सैपियंस है।
- हमारी पृथ्वी की उत्पत्ति लगभग 4.6 अरब पूर्व एवं इस पर जीवन की उत्पत्ति लगभग 4 अरब पूर्व हुई।
- जीवन की उत्पत्ति के समय ऑक्सीजन गैस पृथ्वी के वातारण में अनुपस्थित थी।
- प्रथम हृदय ध्वनि लब कहलाती है जो आलिंद-निलय कपाट के बंद होने के कारण उत्पन्न होती है।
- मनुष्य का हृदय एक मिनट में 72 बार धड़कता है।
- मानव मस्तिष्क का वजन 1.4 किग्रा तथा आयतन 1650ml होता है।
- मनुष्य के शरीर में कुल 206 हड्डियां होती है तथा नवजात शिशु में 300 हड्डियां होती है।
- मनुष्य शरीर में सबसे छोटी हड्डी कान की हड्डी स्टेपीज होती है।
- मानव शरीर की सबसे बड़ी हड्डी जांघ की हड्डी फीमर होती है।
- सबसे लम्बा गर्भकाल लगभग 20 महीने हाथी में पाया जाता है।
- भारत में पहली बार जनगणना सन् 1881 में हुई।
- विश्व की वर्तमान जनसंख्या 7.6 बिलियन है।

पूर्णिमा जोशी
पीजीडीसीए

माँ

मैं अपनी कविता की पंक्तियों के माध्यम से उस बच्चे की करूण वेदना प्रकट करना चाहती हूँ जिस बच्चे ने डेढ़ साल की आयु में ही अपने माँ को खो दिया तब जब वो बच्चा ठीक से बोलना भी नहीं सीखा। उस बच्चे की आंखे प्रतिपल केवल माँ की छवि देखना चाहता था। उस बच्चे का हृदय माँ की आवाज सुनना चाहता था, माँ की मुस्कुराहट देखना चाहता था। किन्तु ये संभव नहीं था वो बच्चा तो अपनी बातें किसी से कह भी नहीं सकता मुझमें इतनी क्षमता नहीं कि मैं उसकी पीड़ा प्रकट कर सकूँ किन्तु बस ये छोटी सी कोशिश है।

माँ मेरी दुनिया
माँ मैं तेरी परछाई हूँ, रहने दे मुझे अपने साये में
मत जा मुझे यूं छोड़, इस वीरान जमाने में
जिन्दगी तो तूने दे दी माँ, माँ तेरी ममता का साया
लाऊं कहाँ से...
माँ मेरे बारे में तेरे सिवा, किसी और ने नहीं सोचा
माँ गुम हो जाऊंगा मैं, दुनिया के इस गुमनाम अंधेरे में
अपना-अपना सब करे, मैं किसे कहूँ अपना?
माँ मुस्कुराना तो मैनें तेरे होठों से सीखा
अब तो मुस्कुराहट लाऊं कहाँ से...
माँ मैं कैसे कहूँ यहाँ के लोगों ने
मुस्कुराहट के बदले आँसू देना सिखाया
माँ मैंने आँसू पोंछना तो
तेरे इन आँचल से सीखा, तेरी आँचल का सुकून
मैं लाऊं कहाँ से...
जान गई माँ, पूरी दुनिया के लिये तुम मेरी माँ हो,
लेकिन माँ तो मेरे लिये तुम मेरी दुनिया हो!!!

नीतू साहू
बीएससी, द्वितीय

क्या आप जानते हैं?

1. मानव शरीर की सबसे बड़ी हड्डी फीमर है और यह स्टील से भी मजबूत होती है। क्या आप जानते हैं कि यह किसी व्यक्ति के शरीर के वजन का 30 गुना अधिक वजन सह सकती है।
2. जब तक इंसानों का बच्चा कम से कम एक महीने का नहीं हो जाता तब तक वह आंसू नहीं बहा सकता।
3. मानव जीवन काल में 25,000 क्वार्टर लार का उत्पादन करता है जो दो स्वीमिंग पूलों को भरने के लिए पर्याप्त है।
4. आपको यह जानकर हैरानी होगी सेब और केले की खुशबू किसी व्यक्ति के शरीर का वजन कम करने में मदद कर सकती है।
5. मानव शरीर में सभी रक्त वाहिकाओं की कुल लंबाई लगभग 100,000 किमी है।
6. आँख का कॉर्निया भाग मानव शरीर का एकमात्र ऐसा भाग है जहाँ तक रक्त नहीं पहुँचता।
7. मनुष्य के बाल प्रतिवर्ष लगभग 6 इंच बढ़ते हैं और मनुष्य की खोपड़ी में लगभग 100,000 बाल होते हैं।
8. मनुष्य की हड्डियाँ एक बार की तुलना में पांच गुना अधिक मजबूत होती है।
9. एक औसत व्यक्ति अपने जीवन काल में लगभग 100,000 मील 160,930 किमी चलता है, जो सचमुच दुनिया में चार बार घूमने के समान है।
10. मानव शरीर में सबसे मजबूत मांसपेशी जबड़े की मांसपेशी होती है।

ईशा साहू
बी.एस.सी प्रथम

बारिश

हवा का रूख कहीं और का है शायद
बादलों की तबियत नासाज है
बदला है मौसम का मिजाज, या बरखा का मूड खराब है
बस चंद रोज और हमारे सब्र कीआजमाइश होगी
देखिएगा बस कुछ ही दिनों में बारिश होगा
तालाब होंगे लबालब साइकन खुलेंगे
बूंदों की अशर्फियों से, पोखरों के खजाने भरेंगे
बाजारों की रौनक छतरियां बनेगी दीवारों पर सीलन की
चित्रकारी सजेगी कभी फुहारे, कभी झडी
कभी घनघोर साजिश होगी देखिएगा बस कुछ ही
दिनों में बारिश होगी, बंद होगी बर्नियां आचार की कसकर
सलीके से रखे जाएंगे पापड़ के कनस्तर ओवर टाइम करेगी
चाय की तपेली नाश्ते में आएगी
गरमा-गरम जलेबी सुबह भुट्टे की फीस
शाम भजिए की फरमाइश होगी
देखिएगा बस कुछ ही दिनों में बारिश होगी।

प्रियंका प्रधान
बी.एस.सी. तृतीय

माँ की याद

सुष्मिता रॉवल
बी.एस.सी तृतीय

माँ की याद और हॉस्टल के दिन
कुछ ख्वाब लेकर घर से मैं आयी हूँ
मिल रहे हैं सब होकर अंजान जैसे।
माँ की यादों में हर पल हम भी रोते हैं
पापा की उम्मीद के हर सपने सोचते हैं।
हॉस्टल के बंद कमरे में हम भी छुप के सोते हैं
माँ के आँचल में सिमट कर
सोने के वो दिन भी याद करते है।
दिल जब भी उदास होता है
घर में बिताये हसीन पल याद कर लेते हैं।
अब मम्मी की रोज सुबह जगाने वाली
आवाज भी नहीं सुनाई देती
न तो बिना मांगे मिलने वाला नाश्ता यहाँ से मिलता।
आज बहुत दिनों बाद रोना आ गया माँ
बस एक बार गले से लगा लो न माँ।
अकेले में बैठकर तो जी भरकर रो लेते हैं।
लेकिन हैलो, हाँ! माँ सब ठीक है कहकर
फोन पर मुस्कुरा देते हैं।
कुछ न करने वाले भी सब कुछ कर जाते हैं
और माँ-बाप की कीमत उनसे पूछना
जो घर छोड़कर पढ़ने जाते हैं।

हूँ नादान ज़रा सी

हूँ नादान ज़रा सी, पर दिल की तो हूँ बड़ी सच्ची
ज़रा सी रूखेपन से, सिमट सी जाती हूँ मैं,
पल दो पल के बाद, खुद ही खिल जाती हूँ मैं
पर ये तो है ना मेरी कमी...
ये तो है, मेरे ईश का वर
जिसने बनाया मुझे इक कलि
मैं बोझ नहीं इस दुनिया में
मैं तो हूँ एक कोमल सी कली
मैं तो हूँ, इक कोमल सी कली

रूपाली निषाद
बी.एस.सी. तृतीय

आँखो में क्या है?

पिता की आंखों में	- फर्ज
माता की आंखों में	- ममता
भाई के आंखों में	- प्यार
बहन की आंखों में	- स्नेह
अमीर की आंखों में	- घमण्ड
गरीब की आंखों में	- आशा
मित्र की आंखों में	- सहयोग
दुश्मन की आंखों में	- बदला
सज्जन की आंखों में	- दया
शिष्य की आंखों में	- आदर

प्रियंका तिवारी
बी.कॉम. कंप्यूटर तृतीय

पर्यावरण

गीतांजली निर्मलकर
बी.एस.सी तृतीय

इंसान की सारी माया
पर्यावरण पर संकट लाया
देश को विकसित बनाया
पर्यावरण को खूब सताया
पेंड़ काट इंसान मस्त हो गए
अपने स्वाःर्थ को दिया बढ़ावा
पर्यावरण को खूब सताया
पंछी सारे लुप्त हो गए
इंसान सारे सुप्त हो गए
इमारतें तो बहुत बनाया
पर्यावरण को खूब सताया
प्रदूषण को इतना बढ़ाया
पर्यावरण प्रदूषण की चपेट में आया
इंसानों को फिर भी समझ ना आया
पर्यावरण को खूब सताया
पर्यावरण की दुहाई
सुन लो पेंड़ काटने वाले कसाई
पेड़ लगाओ, देश बचाओ
पर्यावरण को स्वच्छ बनाओ।

आकलन

कुछ दिन पहले मुझे, अपने हस्बैंड के साथ आते हुए देर हो गई और रात के समय हर चीज जिसे मैं देख रही थी वही यलो दिखाई दे रही थीं ना सड़कों पर अब वाइट लाइट्स थी और ना ही लोगों के घरों में वाइट लाइट्स थी सब लाइट येलो थीं और मैं मन ही मन सोच रही थी शायद लोगों के टेस्ट चेंज हो गए हैं हो सकता है कि फैशन चेंज हो गया है या फिर ट्रेंड चेंज हो गया है अब लोग वाइट लाइट्स को नहीं प्रिफर करते यलों लाइट्स को प्रिफर करते हैं घर आकर देखा तो हमारे घर की लाइटें भी बदली हुई थी तो मैंने अपने हस्बैंड से पूछा हमने कब अपने घर की लाइट्स चेंज कराई तब उन्होंने मुझे याद दिलाया यह जो ग्लासेस आप ने पहन रखे हैं यह यलो है जिसकी वजह से आपको हर चीज यलो नजर आ रही है।

मैं आपको यह चीज बताना चाहती हूं कि अपने ग्लासेस के थ्रू हम दुनिया को देखना चाहते हैं कभी जजमेंट के ग्लासेस से तो कभीself & righteous के ग्लासेस कभी किसी को परखने की ग्लासेस तो कभी कि किसी की जिंदगी का आंकलन करने के ग्लासेस, तो आज अगर आपको दूसरों की लाइफ पसंद नहीं है दूसरों की लाइफ अपनी लाइफ से कम नजर आती है तो यह ग्लासेस को उतार कर फेंक दें। एक कहावत भी तो है ''सावन के अंधे को सब कुछ हरा ही नजर आता है'' आज अपने चश्मे से हटकर दुनिया को देखें और दुनिया आपको बहुत ही खूबसूरत लगेंगी।

God Bless you all!

Mrs. Renu Gideon
Office Incharge

इको क्लब - हरियर वसुंधरा

पर्यावरण से अभिप्राय हमारे चारों ओर फैले हुए उस वातावरण एवं परिवेश से है जिसमें हम घिरे रहते हैं प्राकृतिक व्यवस्था के अंतर्गत पर्यावरण के समस्त भौतिक व जैविक घटक प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से परस्पर में संबंध है। जल, वायु, मृदा, सूर्य प्रकाश आदि भौतिक घटक जीवों की उत्पत्ति व विकास के लिये अनुकूल दशायें प्रदान करते हैं। अतः पर्यावरण संरक्षण में ही हमारा सुरक्षित भविष्य निहित है।

सूरज की किरणें, जब पड़ती है धरती पर
तभी होता है बसेरा, पेड़ लगाओ धरती बचाओ, इस पर बसेरा

महाविद्यालय में इस वर्ष कोविड-19 पेंडमिक के चलते ऑनलाईन गतिविधियाँ करायी गई- हमारे इको क्लब के द्वारा महाविद्यालय में छात्राओं के लिये पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम निरंतर संचालित किया जा रहा है। जिससे छात्रायें इन समस्याओं में रूबरू हो और जागरूक होकर 'एक कदम प्रकृति की ओर बढ़ायें' हम, हमारे इको क्लब का मुख्य उद्देश्य है। इसके लिये हम निरंतर प्रयत्नशील हैं।

पोस्टर प्रतियोगिता 'जलवायु परिवर्तन'
औषधीय एवं फलदार पौधों का वितरण
निबंध लेखन- 'ओजोन परत क्षरण कारण एवं रोकथाम'
स्लोगन प्रतियोगिता- 'विश्व ओजोन दिवस'
आदि कार्यक्रम का आयोजन इस वर्ष किया गया।

डॉ. सीमा साहू
प्रभारी, इको क्लब वनस्पति विभाग

कोई अर्थ नहीं

नित जीवन के संघर्षों से,
जब टूट चुका हो अंतर्मन
तब सुख के मिले समन्दर का
रह जाता कोई अर्थ नहीं

जब फसल सूखकर जल के बिन
तिनका-तिनका बन गिर जाये
फिर होने वाली वर्षा का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।

संबंध कोई भी हो लेकिन
यदि दुःख के समय में साथ न दे अपना
फिर सुख में उन संबंधों का
रह जाता कोई अर्थ नहीं

छोटी-छोटी खुशियों के क्षण
निकल जाते हैं रोज जहाँ
फिर सुख की नित्य प्रतीक्षा का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।

मन कटुवाणी से आहत हो
भीतर एक छलनी हो जाये
फिर बाद कहे प्रिय वचनों का
रह जाता कोई अर्थ नहीं

सुख-साधन चाहे जितने हो
पर काया रोगों का घर हो
फिर उन अगनित सुविधाओं का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।

मोहिनी सोनी
बी.एस.सी. कम्प्यूटर तृतीय

दो पल की जिंदगी और इस दो पल में हम

अंधेरा है तो रोशनी भी जरूर होगा
गम है तो खुशी भी ज़रूर मिलेगी
इंतज़ार है तो मुकाम भी ज़रूर मिलेगा
उम्मीद है तो नई सुबह फिर होगी
दो पल की जिंदगी और इस दो पल में हम।1।
कुछ पल मुश्किल हो सकते हैं पर जिंदगी नहीं
करना तो बहुत कुछ है पर जीना अभी है
बुराइयां हो सकती है जहां में पर अच्छाइयां है खुद में
बदलाव दुनिया में नहीं करना है खुद में
और इस बदलाव में भूलना नहीं
कि जिंदगी का असली मकसद जीना इस पल में है
क्योंकि दो पल की जिंदगी और इस दो पल में हम।।2।।
बेहतरी है बेहतर करने में नुकसान है
किसी का बुरा सोचने में
हर किसी के अंदर जज्बा है पर हम
हर पल इस जज्बे को जिंदा रखा है
क्योंकि दो पल की जिंदगी और इस दो पल में हम।।3।।
बरसात को देखकर डूबने की फिक्र करोगे
तो उसकी बूंदों का एहसास करोगे कब
डूबना तो एक वक्त है ही पर ताकोगे
इस वक्त का तो जियोगे कब
क्योंकि दो पल की जिंदगी
और इस दो पल में हम।।4।।

अदिति अग्रवाल
बी.एस.सी. तृतीय

सुविचार

प्रियंका तिवारी
बी.कॉम. कंप्यूटर तृतीय

- कितने झूठे हो गए हैं, हम। बचपन में अपनों से भी रोज रूठ जाते थे। आज दुश्मनों से भी मुस्कुरा के मिलते हैं।
- मीठी जुबान अच्छी आदतें अच्छा व्यवहार और अच्छे लोग हमेशा सम्मानित होता है।
- मित्रता दुःख को आधा और सुख को दुगुना कर देती है।
- अपनी विशेषताओं का प्रयोग करो, जीवन के हर कदम में प्रगति का अनुभव होगा।
- यदि आप गुस्सैल और अहंकारी हैं तो आपको दुश्मनों की जरूरत नहीं है।
- आपने कभी सोचा है रिश्तों का मतलब क्या होता है? मेरी राय में जो रिश्ते किसी मतलब के लिए बनाए जाते हैं वे तो रिश्ते ही नहीं होते हैं।

बचपन का जमाना

एक बचपन का जमाना था
जिसमें खुशियों का खजाना था
चाहत चाँद को पाने की थी
पर दिल तितली का दीवाना था
खबर न थी कुछ सुबह की
ना शाम का ठिकाना था
थक कर आना स्कूल से
पर खेलने भी जाना था
माँ की कहानी थी
परियों का फसाना था
बारिश में कागज की नाव थी
हर मौसम सुहाना था
रोने की वजह ना थी
ना हँसने का बहाना था
क्यूँ हो गए हम इतने बड़े
इससे अच्छा तो
वो बचपन का जमाना था
वो बचपन का जमाना था।

एकता शर्मा
बी.सी.ए. तृतीय

नशा विरोध

पी रहे हो क्यों? तुम सिगरेट
तुमसे हो रही ये बहुत मिस्टैक
क्योंकि सिगरेट पीकर नहीं बना कोई ग्रेट
वरना जल्दी खुल जाएगा नरक का गेट।
ओ बीड़ी पीने वाले
सिगरेट से सस्ती है बीड़ी
क्या इसलिए पी रहे हो बीड़ी
ऐसे में सच कहा किसी ने
पीओगे बीड़ी तो
चढ़ नहीं सकोगे जिन्दगी की सीढ़ी।
मत उड़ाओ जिंदगी धुएं में
गिर जाओगे मौत के कुंए में
कहते हैं जीवन तो मस्ती है
पर मुझको बताओ क्या ये
सिगरेट से भी सस्ती है।
गुटका खाके दांत को कर दिया लाल,
फिर भी कहता है माँ का हूँ मैं लाल।
भले ही तुम कर दोगे सब कुछ लाल
नहीं रहेगा खून तुम्हारा लाल
तीनों को छोड़ दिया,
नहीं कर रही आपका विरोध
कर रही हूँ नशा विरोध
आओ करें नशा विरोध

प्रियंका तिवारी
बी.कॉम. कंप्यूटर तृतीय

नारी शक्ति

माँ की परछाई और बाबा की गुमशुदा आस हूँ।
माँ की सुरीली लोरी और मखमली गोदी में
सोती हुई नन्ही मासूम बाबा के सिर की ताज हूँ।
इस दुनिया के आलीशान बंगलो की तो
नन्हीं पर अपने चार कद वाले चार दिवारी के अंदर
शहंशा-ए-हिन्द की जन-ए-खास हूँ।
माँ की लोरी में सोती हुई जान,
मासूम जानों को अपनी नींद में सुलाती हुई ममत,
अपनो का पेट भर भुखी रहने का साहस हूँ।
स्वयं अंधेरों में आंसुओं का समंदर बहाकर
अपनो को खुश रखने का दृढ़ निश्चय हूँ।
स्वयं के तन पर अनगिनत बुरी नज़रें हैं पर
अपनो के लिए काला टीका बनकर रहने वाली हूँ।
जी हाँ इस बिखरे हुए आशियाने को समेटने
वाली एक मात्र पात्र हूँ।
हाँ मैं ही हूं सृष्टि का अंत और आरंभ हूँ।

यति साहू
बी.एस.सी. द्वितीय

हिन्दी मेरा अभिमान

सरल-सहज पर है प्रगाढ़ यह
जनमानस की भाषा भी यही
लिया जन्म संस्कृत की कोख से
एकता, अखण्डता, राष्ट्रीयता का संदेश देती
हिन्दी है हिन्द की धड़कन
कश्मीर से कन्याकुमारी तक है परचम
गीतों में, साहित्यों में बिन इसके न भाव आते
माँ शब्द हिन्दी का ममता राग सुनाए।
जन-गण-मन और वंदे मातरम्
तीन रंगों को याद दिलाए
गंगा से गोदावरी की धारा बहते हुए
हर क्षेत्र में हिन्दी का मान बढ़ाए
देश-विदेश में पग जब यह जमाए
मीठे बोल हिन्दी के सबको लुभाए
तृतीय भाषा कहलाकर भी यह
दिलों पर प्रथम है छाए

गुरप्रीत कौर पन्नू
पीजीडीसीए

महतारी मोर भुईयां माटी

आज कईसन दिन आगे कि
महतारी मोर भुईयां माटी
घलो होगे सोना जी
माटी में हमर पुरखा
दादा-दादी, नाना-नानी
माटी म खेले-खाय बड़े होये
आज कईसन युग आगे कि
महतारी मोर भुईयां
माटी घलो होगे सोना जी,
बरखा के टीपीर-टीपीर पान
माटी म आये ते ओखर
महक ह गली मोहल्ला खेत-खार में घलो
छागे ओला देख के खाये बर
जीह ललचा जाये
आज कईसन दिन आगे कि महतारी
मोर भुईयां माटी घलो होगे सोना जी
घरो-घर माटी के चुल्हा म सुघ्घर
साग-भात बनाये के दिन ह घलो नंदागे
प्यास बुझाय बर घड़ा सुराई के पानी के
दिन ह घलो नंदागे
माटी के गुड्डा-गुड्डी अउ खिलौना
घलो देखे बर नई पाबे
आज कईसन दिन आगे कि महतारी मोर
भुईयां माटी घलो होगे सोना जी

पूनम गुप्ता
पीजीडीसीए

लगा सको तो बाग लगाओ

लगा सको तो बाग लगाओ
आग लगाना मत सीखो
जला सको तो दीप जलाओ
दिल को जलाना मत सीखो
कर सको तो काम कर लो
आलस करना मत सीखो
दे सको तो दान दे दो
जान को लेना मत सीखो
सीखो तो कुछ ऐसा सीखो
लाखों में तुम एक दिखो
क्या मार सकेगी मौत उसे
औरों के लिए जीता है
मिलता है जहाँ का प्यार उसे
औरों के जो आंसू पीता है।

रोहिणी साहू
बी.एस.सी. द्वितीय

पिता ऐसे होते हैं

जब मैं सुबह उठी तो कोई
बहुत थककर भी काम पर जा रहे थे, वो थे पापा...
जब मम्मी डांट रही थी
तो कोई चुपके से हंसा रहे थे, वो थे पापा...
ये दुनिया सिर्फ पैसों से चलती है पर
कोई सिर्फ मेरे लिए पैसे कमान जा थे, वो थे पापा...
पेड़ तो अपना फल खा नहीं सकते इसलिए हमें देते हैं पर
कोई अपना पेट खाली रखकर भी मेरा पेट भरे जा रहे थे
वो थे पापा...
सपने तो मेरे थे पर उन्हें पूरा करने का
रास्ता कोई और बताए जा रहे थे, वो थे पापा...
घर में सब अपना प्यार दिखाते हैं पर
कोई बिना दिखाये भी इतना प्यार किए जा रहे थे, वो थे पापा...
पिता एक उम्मीद है एक आस है परिवार की हिम्मत और विश्वास है
बाहर से सख्त अंदर से नर्म है
उसके दिल में दफन कई मर्म है
पिता संघर्ष की आंधियों में हौसलों की दीवार है
बचपन में खुश करने वाला बिछौना है।
पिता जिम्मेवारियों से लदी गाड़ी का सारथी है।
सबको बराबर का एक दिलाता यही एक महारथी है।
सपनों को पूरा करने में लगाने वाली जान है।
इसी से तो माँ और बच्चों की पहचान है।
धरती का धीरज दिया और आसमा सी ऊँचाई है
जिंदगी को तराश के खुदा ने ये तस्वीर बनाई
हर दुःख वो बच्चों का खुद पे सह लेता है
उस खुदा की जीवित प्रतिमा को हम 'पिता' कहते हैं।

छाया साहू
बी.एस.सी. द्वितीय

छोटी सी जिंदगी है

खुशप्रीत कौर
बी.एस.सी. तृतीय

हर बात में खुश रहो
जो चेहरा पास न हो
उसकी आवाज में खुश रहो।
कोई रूठा ही तुमसे
उसके इस अंदाज में खुश रहो
छोटी से जिंदगी है
हर बात में खुश रहो।
जो लौट कर नहीं आने वाले
उन लम्हों की याद में खुश रहो
कल किसने देखा है
अपने आज में खुश रहो।
खुशियों का इंतजार किसलिए
दूसरों की मुस्कान में खुश रहो
छोटी सी जिंदगी है
हर बात में खुश रहो।
क्यों तड़पते हो हर पल किसी के साथ को
कभी-कभी अपने आप में खुश रहो।
जिनको खो दिया है उनकी यादें समेटकर खुश रहो
छोटी सी जिंदगी है हर बात में खुश रहो।

अहो ये धरा, जिसका कण-कण लाल है।

अहो यह धरा, जिसकी मिट्टी का कण-कण लाल है,
अहो ये गगन, जिसको चीरता महराणा का भाल है,
अहो ये इंकलाब, जिसको सुन करके बहरे भी चल उठते थे
आजादी की खातिर, बच्चे-बूढ़े तक मर मिटते थे
अहो ये आजादी, जो ले गई तमाम वीरों की जवानी
बंधी जंजीरें तोड़ने आई रूपा चंडी बन झाँसी की रानी,
अहो ये बलिदान जिसमें स्वर्ण अक्षरों से भगत सिंह का नाम है।
अहो ये मेवाड़ की माटी, जिसमें राजपूतों की शान है
अहो ये इतिहास जिसका कतरा-कतरा रोया था
जब भारत माँ ने 19 साल का खुदीराम खोया था
अमूल्य है ये शौर्य जिसको और अमूल्य कर डाला
जब अंधों नेत्रों से गौरी का पृथ्वीराज ने शीश कलम कर डाला
ऐसी और हैं कई गाथाएं जो प्रराक्रमों की मिसाल है
अहो यह धरा जिसकी मिट्टी का कण-कण लाल है।

समीक्षा सिंह
बी.एस.सी. प्रथम

हर मौसम का अपना-अपना मजा

हर मौसम का अपना-अपना मजा होता है।
जब लोग अपने स्वभाव परिस्थितियों के अनुकूल बना लेते हैं।
मौसम के प्रति खुशी से जीना आना चाहिए।
हर मौसम की अपनी-अपनी विशेषताएं होती है।
लोगों को इन विशेषता के बारे में पता होना चाहिए।
हर मौसम का अपना-अपना माजा होता है।
बस लोगों को खुशी से जीना आना चाहिए।
हर मौसम अच्छा-बुरा तथा छोटा-बड़ा नहीं होता
बस उसे जीना आना चाहिए।
मौसम कोई भी हो चाहे ठंडी, गर्मी, बरसात सब एक बराबर है
हर मौसम के प्रति लोगों को अलग-अलग तरीके से
मौसम के अनुसार खुशी से जीना आना चाहिए।

पूनम गुप्ता
पीजीडीसीए

जीतने के एक चीज़

जीतने के लिए कोई चीज है तो - प्रेम
कहने के लिए कोई चीज है तो - सत्य
लेने के लिए कोई चीज है तो - ज्ञान
दिखाने के लिए कोई चीज है तो - दया
देने के लिए कोई चीज है तो - दान
छोड़ने के लिए कोई चीज है तो - मोह
पीने के लिए कोई चीज है तो - क्रोध
खाने के लिए कोई चीज है तो - गम
फेंकने के लिए कोई चीज है तो - ईर्ष्या
रखने के लिए कोई चीज है तो - इज्जत

प्रियंका तिवारी
बी.कॉम. कंप्यूटर तृतीय

आखिर हार गया कोरोना

मानव की जिद्दी जात ने आखिर
कोरोना को भी हरा दिया
अपनी श्रेष्ठता का मुखौटा उसने लुटने न दिया
एक समय था जब हुआ जन्म कोरोने का
अपनी मौत हर मानव को सामने दिखने लीगी
सहम गया सब कुछ पल-भर के लिए
धरती, पर्वत, गगन तारे और सूरज की रोशनी भी हार गयी।
हार गयी हर वनस्पति और हार गये थे सपने सबके।
फिर भी ना हारा कभी मानव का हौसला
इसीलिए तो कोरोना को हरा दिया।
उम्मीदों की किरण जगी हुई है मन में
कल फिर भी वही समय लौट आएगा
लौट आएगा बच्चों का बचपन
खुलेगी बाजारों की रौनक फिर से,
फिर से लोगों में दिखेगा फैशन का खुमार
सुना पार्क भी बच्चों की किलकारी से गुज उठेगा
लौट के आएगा वो दिन जब न कोई डर सताएगा
स्कूल के पुराने दोस्तों से जो मिलना होगा
जब छुट्टी के समय बच्चे सड़कों पर दौड़ेंगे
मेलों में भींड़ बढ़ेगी फिर से
सड़कों की रौनक खिल उठेगी,
खिल उठेंगे फिर सबके चेहरे,
क्योंकि हारा तो कोरोना है
मानव की उम्मीद नहीं हारी है।
कोरोना को भी हरा दिया।

जयश्री साहू
बी.कॉम. द्वितीय

बचपन

अंकिता वर्मा
बी.एस.सी. द्वितीय

वो बचपन भी कितना सुहाना था,
जिसका रोज एक नया फसाना था।
कभी पापा के कंधों का,
तो कभी माँ के आँचल का सहारा था
कभी बेफिक्री मिट्टी के खेल का
तो कभी दोस्तों का साथ मस्ताना था।
कभी नंगे पाँव वो दौड़ का
तो कभी पतंग ना पकड़ पाने का पछतावा था।
सच कहूँ तो वो दिन ही हसीन थे
ना कुछ छिपाना और दिल में जो आए बताना था।

राह में मुश्किलें हजार होगी

वैष्णवी विश्वकर्मा
बी.कॉम. तृतीय

तेरे सपनों की राह में मुश्किलें हजार होगी
तू राह पे चल तो सही
कदम आगे बढ़ा तो सही
देखना एक दिन तेरी मंजिल भी साकार होगी।
राह में तेरी मुश्किलें हजार होगीं।
तेरे सपनों की डगर में समस्याये अपार होगी।
तू आगे बढ़ने का मन बना तो सही
तू अपनी मंजिल को आजमा तो सही
देखना एक दिन तेरे पीछे लोगों की कतार होगी।
राह में मुश्किलें हजार होगी।
तुझे नीचा गिराने के लिये हथेलियां हजार होगी।
तू अपने माँ-बाप को देख तो सही
प्रेरणा पा उनसे कदम बढ़ा तो सही,
देखना एक दिन तेरे इन्ही हाथों से तालियाँ हजार होगी।
राह में तेरी मुश्किलें हजार होगी।
तुझे आगे बढ़ता देख तेरी चरित्र पर अंगुलियाँ हजार होगी।
तू अपनी प्रतिभा पहचान तो सही,
महान व्यक्ति बनने की ठान तो सही
देखना एक दिन तेरी सर्वत्र प्रसिद्धि अपरम्पार होगी।
राह में तेरी मुश्किलें हजार होगी।

पढ़ना है

मधु वर्मा
बी.एस.सी. तृतीय

बढ़ने की मुझे मनाही है, सो पढ़ना है
मुझ में भी तरूणाई है, सो पढ़ना है
सपनों ने ली अंगड़ाई है, सो पढ़ना है
कुछ करने की मन में आई है, सो पढ़ना है
क्योंकि मैं लड़की हूँ, मुझे पढ़ना है।।
मुझे दर-दर नहीं भटकना है, सो पढ़ना है
मुझे अपने पावों पर चलना है, सो पढ़ना है
मुझे अपने डर से लड़ना है, सो पढ़ना है
मुझे अपना आप ही गढ़ना है, सो पढ़ना है
क्योंकि मैं लड़की हूँ, मुझे पढ़ना है
कोई जोर-ए-जुल्म से बचना है, सो पढ़ना है
कई कानून को परखना है, सो पढ़ना है
मुझे नये धर्मों को रचना है, सो पढ़ना है
मुझे सब कुछ ही तो बदलना है, सो पढ़ना है
क्योंकि मैं लड़की हूँ, मुझे पढ़ना है

पाषाण- एक अविरल गाथा

मैं यथार्थ हूँ उन बीते हुए कल का...
मैं साक्ष्य हूँ धरा में अविरल का...
मैं मित्र हूँ मृत्तिका, वायु, जल का...
मैं यथार्थ हूँ उन बीते हुए कल का...
कितने दृश्य बसे हैं इन आँखों में...
जीवों के जलके बनते देखा राखों में...
मैं झुलसा हूँ ज्वालामुखी के अंगारों में...
कभी अलग तो कभी प्रलय के अंधकारों में,
मेरा रोम-रोम पीड़ित है युगों-युगों के छल का...
मैं यथार्थ हूँ उन बीते हुए कल का...
कितने युग देखा प्रकृति के रंग रूप का...
कितने युद्ध देखा रामायण, महाभारत स्वरूप का...
मैंने विनाश देखा, अग्रिमग्न विश्वरूप का...
और मैं अंत भी देखूंगा पृथ्वी के अंतिम रूप का...
मैं विनाश हूँ जो प्रमाण रहूँगा उस पल का...
मैं यथार्थ हूँ उन बीते हुए कल का...

डिम्पल देवांगन
बी.कॉम. अंतिम वर्ष

सपने बुनना सीख लो

बैठ जाओ सपनों के नाव में,
मौके की तलाश करो, सपने बुनना सीख लो,
खुद ही थाम लो हाथों में पतवार मांझी का,
ना इंतजार करे, सपने बुनना सीख लो,
पलट सकती है नाव की तकदीन,
गोते खाने सीख लो, सपने बुननो सीख लो,
अब नदी के साथ बहना सीख लो,
डूबना नहीं तैरना सीख लो, सपने बुनना सीख लो,
भंवर में फंसी सपनो की ना,
अब पतवार चलाना सीख लो, सपने बुनना सीख लो,
खुद की राह बनाना सीख लो,
अपने दम पर सपने बुनना सीख लो,
तेज नही तो धीरे चलना सीख लो,
भय के भ्रम से लड़ना सीख लो, सपने बुनना सीख लो,
कुछ पल भंवर से लड़ना सीख लो, समंदर में विजय की पताका लहराना सीख लो, सपने बुनना सीख लो

मेरा प्यारा गुरूकुल

गुरुकुल, गुरुकुल तू है कितना कूल,
तुने दिलायी थी हमें स्कूल
बाकी कॉलेज को जब देखा
सबने कर दिया पढ़ाई को अनदेखा।
पर जब देखी गुरुकुल की पढ़ाई
सब बच्चे हो गये शॉक
और बोले गुरुकुल यू रॉक
हो गये सब हमारे क्लियर डाउट्स
जब अग्रवाल सर ने पढ़ाया एकाउंट्स
स्टेटिक्स को देख सब बच्चे चले गये सदमा में
पर मज़ा तो बहुत आया जब इसे पढ़ाया मैडम पद्मा ने
पहले लगता था हिन्दी पढ़ना है एक सज़ा
पर जब पढ़ाया मैडम सीमा ने अपने अंदाज से तो
इसमें भी आने लगा मज़ा
सिमरन मैडम देती है अंग्रेजी का ज्ञान हमें
करती है भविष्य के तैयार हमें
अब न पढ़ाई से कोई मुंह मोड़ेगी
जनाब ये किताबें मुझे कुछ बनाकर ही छोड़ेगी।

सायेमा सिद्धिकी
बी.कॉम. द्वितीय

जिंदगी और मौत

जिंदा थे तो किसी ने पास नहीं बिठाया
अब खुद मेरे चारों ओर बैठे जा रहे हैं।
पहले किसी ने मेरा हाल नही पूछा,
अब सभी आँसू बहाए जा रहे हे।
एक रूमाल किसी ने भेंट न किया जब हम जिंदा थे
अब शालें और कपड़े उपर से चढ़ाये जा रहे है।
सबको पता है कि अब यह इसके काम का नहीं
मगर फिर भी बेचारे दुनियादारी निभाये जा रहे हैं।
कभी किसी ने एक वक्त का खाना नहीं खिलाया,
अब देशी घी मेरे मुंह में डाले जा रहे हैं।
जिंदगी में एक कदम भी साथ न चल सका कोई
अब फूलों से सजाकर कंधे पे उठाये जा रहे हैं।
आज पता चला कि मौत जिंदगी से कितनी बेहतर है।
हम तो बेवजह जिंदगी की चाहत किये जा रहे हैं।

दुर्गा पटेल
बी.एस.सी. तृतीय

हमें रूलाकर छोड़ गए...

रोते हुए आप हमें नहीं देख पाते थे बाबूजी।
आज कैसे आप रूलाकर छोड़ गए
रखकर हमारे सर पर हाथ
आप कैसे हमें अकेला छोड़ गए
रामायण, महाभारत आप यूं ही हमें सुना दिया करते थे।
हमें क्या पता था आप जीवन की सीख
हमें कहानियों में बता दिया करते थे।
डाँट पड़ती थी आप मुझे सही बता दिया करते थे।
रोते हुए आप मुझे नहीं देख पाते थे।
जो मुझे रूलाए आप उसे डांट लगाते थे।
आज फिर से सब को डांट लगाओ ना बाबूजी
एक बार फिर से वापस आओ ना बाबूजी
आप के जाने के बाद हम ना रोए इसलिए
जाते-जाते भी आप मुस्कुरा कर चले गए।
ऐसा थोड़ी ना होता है बाबूजी आप बिना कुछ
बताए बिना कुछ कहे यूं ही हमारा साथ छोड़ गए
रोते हुए आप हमें नहीं देख पाते थे बाबूजी
आज कैसे आप हमें रूला कर छोड़ गए।

ज्योति उपाध्याय
बी.कॉम. तृतीय

चाहती हूँ मैं मेरी कविता छपे

चाहती हूँ मैं, मेरी कविता छपे।
शब्दों का ज्ञान नहीं फिर भी
मेरी कविता छपे
पंख नहीं फिर भी
परिंदा, उड़ना चाहता है
सूरज उगा नहीं फिर भी
फूल खिलना चाहता है
मालूम है बनूँगी
बड़ी कवियित्री
परिंदा भी उड़ेगा
फूल भी खिलेगा
मेरी कविता भी छपेगी
कॉलेज मैगजीन में।

प्रियंका तिवारी
बी.कॉम. कंप्यूटर तृतीय

मेरे ख्वाबों की पर्वाज़

मेरे ख्वाबों की पर्वाज़, कुछ यूं थी
पंख लगे थे, दो मुझ पर
उड़ती रही मैं, सुन्दर सी उपवन की कूंचा में.
मेरे ख्वाबों की पर्वाज़ कुछ यूँ थी
अक्ल ना गई कहीं और
मैं खुद में ही चकनाचूर थी।
मेरे ख्वाबों की पर्वाज़ कुछ यूँ थी
कि रहनुमा थी मेरी, एक नन्हीं पंखों वाली
जो बनी थी मेरी सक्त
पर होने लगी थी, मुझे भी थोड़ी अनासी
मेरे ख्वाबों की पर्वाज़, कछ यूँ थी,
कि चाह थी कुछ और पर्वाज़ की
पर सूरज की लालिमा चली गई मेरे दोनों नयनों में
और निंदिया रानी लौट गयी अपने घर
मेरे ख्वाबों की पर्वाज़ कुछ यूँ थी
कुछ यूँ थी, कुछ यूँ थी
अर्थ- पर्वाज़=उड़ान, कूंचा = गलियां,
रहनुमा = रास्ता दिखाने वाली, सक्त = गुरु

रूपाली निषाद
बी.एस.सी. तृतीय

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर 2021-22

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर 2021-22

मशरूम उत्पादन कार्यशाला 2021-22

योग एवं ध्यान शिविर 2021-22

अंतर्कक्षीय नृत्य प्रतियोगिता 2021-22

नि:शुल्क आयुष्मान कार्ड वितरण 2021-22

अंतर्कक्षीय प्रतियोगिता 2021-22

नि:शुल्क टीकाकरण शिविर 2021-22

स्व. डॉ. श्रीमती अनीता सेन

पूर्ण अध्यक्ष

देश के सुविख्यात ठुमरी गायिका शिक्षाविद्, साहित्य की पोषक स्व. डॉ. श्रीमती अनीता सेन में बाल्यावस्था से ही संगीत के प्रति समर्पित भावना दिग्दर्शित होने लगी थी। श्रीमती सेन में अनेक ऐसे गुण विद्यमान थे जिनके कारण वे अत्यंत लोकप्रिय रही है।

सत्यमशिवम्-सुन्दरम् के अतिरिक्त संगीत साधना एवं पति आराधना की प्रवृत्ति से ही सुर लय ताल का एक ऐसा संगम निर्मित हुआ जहाँ संगीत की स्वर लहरियाँ उनके जीवन में प्रगति और सफलता की अनूठी मिसाल बन गई।

एक पात्र के रुप में पुनीता, विदुषी और विभिन्न उत्कृष्ठ उपमाओं से अलंकृत स्व. डॉ. श्रीमती अनीता सेन भले ही सशरीर हमारे साथ नही हैं, किन्तु आजीवन उसकी स्मृमि हमारेमानस पटल पर अमिट रहेगी।

भातखण्डे ललितकला शिक्षा समिति द्वारा संचालित

गुरुकुल महिला महाविद्यालय

कालीबाड़ी रोड़, रायपुर (छ.ग.) फोन : 0771–4053443

Email : info@gurukulraipur.com